



धर्म परिवर्तन

H
291.42 M 41 D

माता प्रसाद

धर्म-परिवर्तन

लेखक
माताप्रसाद

आकाश प्रिण्टर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
ई-10/663, उत्तरांचल कॉलोनी, गाजियाबाद (उ. प्र.)



Library

IAS, Shimla

H 291.42 M 41 D



G6077

© संपादक

संस्करण : 2001

मूल्य : 80.00 रुपये

वितरक :

आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

ई-10 '663, उत्तरांचल कॉलोनी

(संगम टाकिज) लोनी वॉडर, गाजियाबाद

☎ : 603892

लेज़र कम्पोजिंग :

सिटी कम्प्यूटर्स

गंगा विहार, दिल्ली-94

मुद्रक :

आर.के. ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

दो शब्द

‘धर्म-परिवर्तन’ की पाण्डुलिपि सन् 1992 ई. में ही तैयार हो गई थी, इसे छपने के लिए मैंने अर्चना त्रिपाठी, नई दिल्ली को दे दी थी। सन् 1993 ई. को राज्यपाल होकर अरुणाचल प्रदेश चला गया। बाद में सुश्री अर्चना त्रिपाठी ने बताया कि उक्त पाण्डुलिपि कहीं गायब हो गई, इस पर मुझे बड़ा दुःख हुआ। मई 1999 ई. में अरुणाचल से वापस आने पर कागजों की उलट-पलट में पाण्डुलिपि की प्रति का कुछ भाग मिल गया, उसी में कुछ संशोधन कर नये रूप में ‘धर्म-परिवर्तन’ नाटक प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

यह नाटक डा. अम्बेडकर के जीवन पर आधारित है। डा. अम्बेडकर के जीवन और कृत्यों पर अनेक ग्रन्थ रचे गए हैं। कुछ उनके भाषणों के संग्रह के रूप में हैं, कुछ उनके संघर्षों, कुछ पार्लियामेण्ट में उनके द्वारा किए गए कार्यों के रूप में मिलते हैं। उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाएँ निकालीं और कई अमूल्य ग्रन्थों की रचना की है, इन्हीं को आधार बनाकर मराठी, हिन्दी और अंग्रेजी और भारत की दूसरी भाषाओं में बाबा साहब पर अनेक विद्वानों ने पुस्तकें लिखी हैं और आगे भी लिखी जाती रहेंगी। मैंने भी डा. अम्बेडकर के जीवन के कुछ पहलुओं की झाँकी इस छोटी-सी पुस्तक में दिखाने का प्रयास किया है। इसमें बाबा साहब के धर्मान्तरण पर विशेष ध्यान दिलाया गया है।

आज कुछ लोग धर्मान्तरण का बड़ा विरोध कर रहे हैं, लेकिन वही लोग दूसरे धर्मों में गए लोगों को पुराने धर्म में पुनः धर्मान्तरित करने का नाटक भी कर रहे हैं, लेकिन जब इन पुनः धर्मान्तरित लोगों के साथ बेटी-बेटे के विवाह का प्रश्न आएगा तो यह भाग खड़े होंगे और उन्हें अधर में छोड़ देंगे।

हिन्दू समाज में धर्मान्तरण के कारणों पर गम्भीरता से कभी विचार नहीं किया, इसलिए हिन्दू धर्मावलम्बी बहुत-से दलित और जन-जातियाँ दूसरे धर्मों में चली गईं। उनके साथ समानता का व्यवहार नहीं किया गया। वर्ण-व्यवस्था की खंदक में उन्हें ढकेल दिया गया। उन्हें पग-पग पर अपमानित किया गया, तब विवश होकर वह अन्य धर्मों की छाया में—जहाँ उन्हें सम्मान मिला—चले जाने को विवश हुए। यही धर्मान्तरित लोग जब दूसरे धर्मों में गए तो हिन्दुओं का पुराना व्यवहार सोचकर उनके

कट्टर विरोधी हो गए। इसका दृश्य आजादी देने पर विचार करने के लिए लन्दन में गोलमेज की कॉन्फ्रेंस में देखने को मिला, जब मुस्लिम प्रतिनिधि के रूप में मुहम्मद अली जिन्ना ने कहा जो हिन्दू अपने धर्म के दलितों के साथ ही मनुष्यता का व्यवहार नहीं करते, वे हम मुस्लिमों के साथ कैसे बराबरी का व्यवहार करेंगे ? इसलिए हमें पृथक् निर्वाचन चाहिए। बाद में वही पृथक् निर्वाचन ही भारत के टुकड़े कर पाकिस्तान के रूप में सामने आया।

डा. अम्बेडकर चाहते थे कि यदि हिन्दू धर्म से वर्ण-व्यवस्था हटा दी जाए और तथाकथित धार्मिक ग्रन्थों से शूद्रों के प्रति अपमानजनक बातें हटा दी जाएँ तो वे संशोधित हिन्दू धर्म में रह सकते हैं, किन्तु हिन्दुओं को यह गवारा नहीं था। दलितों और डा. अम्बेडकर को महाद में चोबदार तालाब से जल पीने और नासिक में कालाराम मन्दिर में दर्शन से रोका ही नहीं गया, उन पर लाठियाँ बरसाई गईं। विवश होकर उन्होंने हिन्दू धर्म छोड़ने की घोषणा सन् 1935 ई. में येवला में करनी पड़ी। लगभग 20 वर्षों तक डा. अम्बेडकर ने हिन्दुओं की प्रतिक्रिया धर्मान्तरण की घोषणा पर देखी, फिर गहन अध्ययन-मनन, विचार-विमर्श के बाद बौद्ध धर्म स्वीकार किया।

इस नाटक के लिखने के पूर्व कई विद्वानों की डा. अम्बेडकर सम्बन्धी लिखी पुस्तकें पढ़ीं, इनमें सर्वश्री ए. आर. बाली, कँवल भारती, डा. अंगने लाल, आर. डी. सोनकर, आई. ए. एस. (सेवानिवृत्त), डी. आर. जाटव आदि द्वारा लिखित पुस्तकें तथा विभिन्न पत्रिकाएँ हैं। अतः इन समस्त विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। इस पुस्तक की भूमिका प्रसिद्ध दलित साहित्यकार श्री कँवल भारती ने लिखकर मुझे कृतज्ञ किया है, इसलिए इन्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ।

प्रसिद्ध साहित्यकार डा. एन. सिंह ने पाण्डुलिपि के छपे प्रूफ को देखा और उसे संशोधित करने का कष्ट उठाया तथा इसकी छपाई का बीड़ा उठाया, इसलिए उनके सहयोग को मैं भूल नहीं सकता।

यह नाटक कहाँ तक सफल हुआ है, नाटक की भावना का पाठकों पर इसका प्रभाव पड़ा है, इस बात को न कहकर पाठकों पर ही छोड़ता हूँ। यदि यह कृति पाठकों को पसन्द आई तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

स्थान : शेखपुरा, जौनपुर

—माताप्रसाद

भूमिका

डा. अम्बेडकर का धर्मान्तरण बहुत-से लोगों के गले नहीं उतरता। हिन्दुत्ववादियों से लेकर मार्क्सवादी तक उसको प्रतिक्रियावादी और प्रभाववादी घटना मानते हैं। हालांकि वे यह भी स्वीकार करते हैं कि प्रतिक्रियावाद के मूल में क्रिया की भूमिका सबसे प्रबल होती है। लेकिन जो लोग यह दोषारोपण करते हैं कि डा. अम्बेडकर ने दलितों को साम्यवादी या मार्क्सवादी आन्दोलन में जाने से रोकने के लिए धर्मान्तरण किया था, वे न तो हिन्दू समाज शास्त्र से परिचित हैं और न जाति के यथार्थ से। जिस कालखण्ड में डा. अम्बेडकर दलित मुक्ति की लड़ाई लड़ रहे थे, वह राष्ट्रीय आन्दोलन का कालखण्ड था और हिन्दुत्ववादियों से लेकर मार्क्सवादी तक इस आन्दोलन में कांग्रेस के सहयोगी थे। उन्हें भारतीयों पर अंग्रेजों के अत्याचार बहुत भयानक लगते थे, परन्तु दलितों पर हिन्दुओं के अत्याचारों के प्रति वे उदासीन थे। अम्बेडकर अकेले योद्धा थे, जो जाति के खिलाफ संघर्षरत थे और देश की स्वतन्त्रता से पहले करोड़ों अछूतों की स्वतन्त्रता के प्रश्न को हल करने की लड़ाई लड़ रहे थे। इस लड़ाई में यदि मार्क्सवादियों ने अम्बेडकर का साथ दिया होता, तो राष्ट्रीय आन्दोलन का दृश्य कुछ दूसरा ही होता।

आज जब संघ परिवार के नेता धर्मान्तरण के विरुद्ध फिर से सक्रिय होकर हिन्दू वर्णव्यवस्था को मजबूत करने का कार्यक्रम चला रहे हैं, तो ऐसे में प्रसिद्ध और वयोवृद्ध दलित लेखक श्री माताप्रसाद की नवीनतम नाट्य कृति 'धर्मान्तरण' का प्रकाशन उनके लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। यह सिर्फ डा. अम्बेडकर के जीवन पर आधारित एक ऐतिहासिक नाटक ही नहीं है, वरन् उन परिस्थितियों का उद्घाटन भी है, जो यह स्पष्ट करती हैं कि धर्मान्तरण डा. अम्बेडकर का लक्ष्य नहीं था, अपितु उनके संघर्ष की परिणिति था।

इस नाटक में श्री माताप्रसाद ने अम्बेडकर के उस सम्पूर्ण संघर्ष को, जिसकी परिणिति धर्मान्तरण के रूप में हुई, अत्यन्त बेबाकी से चित्रित किया है। कहीं भी अपने आपको उस पर हावी नहीं होने दिया है। डा. अम्बेडकर को दलितों के एक अजेय योद्धा के रूप में निरूपित करने में उन्हें सचमुच महान् सफलता प्राप्त हुई है। उन्होंने महाड, नासिक और गोलमेज सम्मेलनों का चित्रण उनके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

में इतनी सजीवता से किया है कि वे अभी भी प्रासंगिक लगते हैं।

श्री माताप्रसाद ने यह दिखाने का सफल प्रयास किया है कि किस तरह तत्कालीन हिन्दू समाज में मानवीय अधिकारों से वंचित करोड़ों अछूतों को गुलामी का अहसास कराने के निमित्त ही अम्बेडकर ने महाड और नासिक के सत्याग्रह किए थे। वास्तव में इन्हीं दो सत्याग्रहों ने दलित-मुक्ति के आन्दोलन की आधारशिला रखी थी।

दलितों के राजनीतिक अधिकारों को लेकर लिखा गया इस नाटक का दूसरा अंक अधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है। राष्ट्र और सामाजिक सद्भाव के हित में डा. अम्बेडकर ने गोलमेज सम्मेलन में जीती हुई पृथक् निर्वाचन की माँग को किस प्रकार छोड़ना पड़ा, इसका जितना सजीव चित्रण नाटक में है, उतना ही सजीव दृश्यांकन इस यथार्थ का भी है कि पूना समझौते के बाद भी दलितों का शोषण बन्द नहीं हुआ और उन पर हिन्दुओं के अत्याचार यथावत् होते रहे। लेखक ने डा. अम्बेडकर को इस आधार पर हताश या निराश नहीं दिखाया है कि हिन्दू समाज में समता के लिए उनका संघर्ष सफल नहीं हो सका। लेखक ने डा. अम्बेडकर को इस सोच के आधार पर धर्मान्तरण के लिए अग्रसर दिखाया है कि वर्ण-व्यवस्था जिस धर्म के मूल में है, उस धर्म-समाज में समता की स्थापना सम्भव ही नहीं है। लेखक ने डा. अम्बेडकर के इस निष्कर्ष को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से रेखांकित किया है कि जब तक अछूत हिन्दू बने रहेंगे, तब तक वे दासता, अन्याय और अत्याचार से मुक्त नहीं हो सकते।

श्री माताप्रसाद ने धर्मान्तरण के सन्दर्भ में तिख, ईसाई और इस्लाम के विकल्पों पर भी डा. अम्बेडकर के विचारों को प्रदर्शित किया और राष्ट्रवाद तथा भारतीय संस्कृति की दृष्टि से बौद्ध धर्म में उनकी दीक्षा के ऐतिहासिक सत्य का उद्घाटन किया है।

डा. अम्बेडकर के धर्मान्तरण पर यह एक सफल नाट्य कृति है, जो कई आयामों से धर्मान्तरण के औचित्य को दर्शाती है। इसमें धर्मान्तरण पर एक खुला विमर्श है और यह विमर्श न तो डा. अम्बेडकर को प्रतिक्रियावादी बनाता है और न प्रभाववादी। यह वह विमर्श है, जिसमें डा. अम्बेडकर की समस्त ऊर्जा दलित मुक्ति की ऊर्जा है। यह नाटक डा. अम्बेडकर के प्रति लोगों की न केवल सोच का परिमार्जन करेगा, बल्कि दलित साहित्य में अपना श्रेष्ठ स्थान भी बनाएगा।

सचमुच नाटक विधा में 'धर्मान्तरण' के रूप में एक और सफलतम रचना के लिए श्री माताप्रसाद का यह श्रम प्रशंसनीय और श्लाघनीय है।

नाटक के पात्र

पुरुष पात्र

- डा. बी. आर. अम्बेडकर : दलितों के मसीहा, संविधान निर्माता, दलित जाति में पैदा हुए महान् विद्वान् ।
- समाजीराव गायकवाड : बड़ौदा राज्य के महाराज ।
- कृष्ण केलुस्कर : सिटी हाई स्कूल, बम्बई के निवर्तमान अध्यापक ।
- छत्रपति साहूजी : मराठा राज्य के अन्तिम शासक ।
- महात्मा गांधी : भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के नेता ।
- रैमजे मैकडोनाल्ड : ब्रिटिश साम्राज्य के प्रधान मन्त्री ।
- मुहम्मद अली जिन्ना : मुस्लिम लीग के नेता ।
- डा. राजेन्द्र प्रसाद : स्वतन्त्रता संग्रामी संविधान सभा के अध्यक्ष और भारत के प्रथम राष्ट्रपति ।
- पं. जवाहरलाल नेहरू : भारत के पहले प्रधान मन्त्री ।
- टी. टी. कृष्णामचारी : संविधान सभा के सदस्य ।
- कांग्रेस के अन्य नेता : राजगोपालचारी, मौलाना अबुलकलाम आजाद, मदनमोहन मालवीय, सर तेजबहादुर सप्रू, देवदास गांधी सुत महात्मा गांधी ।
- भदन्तचन्द्र मणि : सबसे ज्येष्ठ 83 वर्षों में कुशीनगर के बौद्ध भिक्षु ।
- डब्ल्यू. एम. अडबोले : धर्मान्तरण समिति नागपुर के सचिव ।
- डा. मावलंकर : सुप्रसिद्ध क्लीनिक चलाने वाले डाक्टर ।
- श्रीनिवासन, पी. एन. राजभोज, पिल्ले, दादा रूपवते, एम. सी. राजा : डा. अम्बेडकर के सहायक दलित नेता ।
- कृष्णचन्द्र निंबालकर : एकाउण्टेण्ट जनरल ऑफिस का हेड क्लर्क ।

मनहर भाई देसाई : एकाउण्टेण्ट ऑफिस का क्लर्क ।
सखाराम जीवनराज मालवीय : एकाउण्टेण्ट जनरल ऑफिस का चपरासी ।
यशवन्त अम्बेडकर : डा. अम्बेडकर के पुत्र ।

स्त्री पात्र

रामवाई : डा. अम्बेडकर की पूर्व पत्नी ।
सविता अम्बेडकर : पहले का नाम लक्ष्मी कबीर, डा. अम्बेडकर की दूसरी पत्नी ।
कस्तूरबा गांधी : गांधी जी की पत्नी ।
कमला नेहरू : पं. जवाहरलाल नेहरू की पत्नी ।
हंसा मेहता : कांग्रेस की जुझारू नेता ।
सरोजनी नायडू : कांग्रेस की वरिष्ठ नेता ।

प्रथम अंक

दृश्य-1

[खड्ग सिंह चौकीदार खड़ा है। सँकरी मोहरी का पाजामा पहने, साफा बाँधे, रंगीन कुरता पहने, लाठी लिये खड़ा है। दूसरी तरफ से सखाराम जीवनराज मालवीय आते हैं। मालवीय धोती, पूरी बाँह की कमीज पहने, सर पर गांधी टोपी लगाए, मस्तक पर तिलक चन्द्र लगाए है।]

खड्ग सिंह : मालवीय जी नमस्कार !

सखाराम जीवनराज मालवीय : नमस्कार ! अरे ठाकुर ऐसे ही कुछ जानकारी करनी थी इसलिए इधर आ गया।

खड्ग सिंह : मालवीय जी कुशल तो हैं। क्या महाराज से भेंट करना है ?

सखाराम जीवनराज : नहीं ठाकुर। महाराज से नहीं। आपसे ही कुछ काम है।

खड्ग सिंह : हाँ-हाँ कहिए, मुझे जो जानकारी होगी, जरूर बताऊँगा।

सखाराम जीवनराज : सुना है हमारे कार्यालय में स्टेट के डिप्टी एकाउण्टेण्ट जनरल की नियुक्ति हो गई है। वह आज आने वाले हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि वह व्यक्ति कौन है ? किस जाति का है ?

खड्ग सिंह : अच्छा ! डिप्टी एकाउण्टेण्ट जनरल के पद पर तो डा. बी. आर. अम्बेडकर की नियुक्ति हो गई है। अमरीका से पढ़कर आ रहे हैं। वह महार जाति के हैं। इनको महाराज ने वजीफा देकर पढ़ने भेजा था। अब शर्त के अनुसार उन्हें बड़ौदा स्टेट की सेवा करने को बुलाया गया है।

सखाराम जीवनराज : बाप रे ! महाराज को क्या हो गया है। घोर कलयुग आ गया है। 'अछूत' ही इस काम के लिए रह गया था। अब तो धर्म बिना रसातल को गए बचेगा नहीं। क्या महाराज को ऊँची जाति का कोई अफसर नहीं मिला ? हम लोग कैसे उसके नीचे नौकरी करेंगे ? महा अनर्थ हो गया। वह व्यक्ति कैसा डाक्टर है।

खड्ग सिंह : मालवीय जी, इनको अमरीका की कोलम्बिया यूनीवर्सिटी ने बहुत ऊँची शिक्षा प्राप्त कर लेने के बदले में वह डाक्टर की उपाधि दी है। जहाँ तक शूद्र की बात है, वह भी तो हिन्दू ही हैं। कृस्तान और मुसलमान से तो अच्छे ही हैं।

सखाराम जीवनराज : कृस्तान और मुसलमान तो ठीक हैं। उनके लेने में तो कोई पाप नहीं है। इसका छूना पाप है। अब मैं जाकर ऑफिस वालों को इसकी सूचना देता हूँ। (जाता है)

डा. अम्बेडकर का प्रवेश, डा. अम्बेडकर सूट, मोजा, जूता, घड़ी, टाई पहने हैं। साथ में एक बोझा ढोने वाला है, उसके सर पर बिस्तरबंद, सूटकेस है।

डा. अम्बेडकर : मैं महाराज से मिलना चाहता हूँ। (जेब से परिचय-पत्र निकालकर खड्ग सिंह को देते हुए) आप महाराज को सूचित कर दें।

खड्ग सिंह : मैं अभी जाता हूँ, आप यहीं रुकें।

खड्गसिंह कार्ड लेकर जाता है, थोड़ी देर में वापस आता है।

खड्ग सिंह : महाराज आपको याद कर रहे हैं।

डा. अम्बेडकर : बोझिये! तुम अभी यहीं रुको।

डा. अम्बेडकर खड्ग सिंह के साथ जाते हैं।

(परदा गिरता है, फिर उठता है।)

[महाराज सयाजी राव गायकवाड को खड्ग सिंह झुककर नमस्कार करके लौट आता है। महाराज एक कुर्सी पर बैठे हैं। सामने एक टेबुल है। फरसी पी रहे हैं। पतली मोहरी का पाजामा, जरीदार जूता, जरीदार कोट, कुरता पहने हैं। लम्बी पगड़ी ऎँठकर बाँध रखी है। गले में मोतियों की माला है। बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। पास ही एक कुर्सी पर कृष्ण केलुस्कर भी बैठे हैं। एक कुर्सी खाली है। डा. अम्बेडकर के आने पर वे खड़े हो जाते हैं। डा. अम्बेडकर हाथ जोड़कर पहले महाराज को, फिर कृष्ण केलुस्कर को नमस्कार करते हैं। महाराज खाली कुर्सी की तरफ संकेत करते हैं और वे दोनों बैठ जाते हैं। डा. अम्बेडकर खाली कुर्सी पर बैठ जाते हैं।]

डा. अम्बेडकर : धन्यवाद महाराज !

महाराज गायवाड : कहिए अम्बेडकर जी आप कब लौटे ? आपका अध्ययन अमरीका में कैसा चला ?

डा. अम्बेडकर : महाराज मैं अध्ययन करने भेजे जाने के लिए आपका सदैव कृतज्ञ रहूँगा। आपकी कृपा से मैंने ऊँची शिक्षा ग्रहण की है और मुझे पूर्ण संतोष है कि आपकी दी गई छात्रावृत्ति का मैंने

सदुपयोग किया है।

इस समय अमरीका की कोलम्बिया यूनीवर्सिटी दुनियाँ की सबसे बड़ी यूनीवर्सिटी है। इसमें 52 हजार छात्र अध्ययन कर रहे हैं। मैं अपने एम. ए. के विषय के अतिरिक्त कोर्स के बाहर की भी बहुत-से विषयों की पुस्तकें पढ़ता था। हमारे दूसरे साथी जब अमरीका की चमक-दमक में रंगरेलियाँ मनाते थे तो मैं यूनीवर्सिटी की लाइब्रेरी के अलावा न्यूयार्क की दूसरी लाइब्रेरियों में भी जाकर मैं अध्ययन करता। अगर जेब खर्च साथ देता तो दुकानों से पुस्तकें खरीदकर पढ़ता था।

गायकवाड : कृष्ण केलुस्कर जी, आपने मुझसे एक सुपात्र को छात्रावृत्ति दिलाकर बड़ा ही अच्छा काम किया।

कृष्ण केलुस्कर : यह सही है। महाराज मैं जब सिटी हाई स्कूल में हेड मास्टर था तो कभी-कभी एकान्त में अध्ययन करने के लिए बम्बई के चर्नी रोड पार्क में जाता था। वहाँ अम्बेडकर को मैं गहन अध्ययन में रत देखता। 'होनहार बिरवान के हो चीकने पात' मैंने इनके उज्ज्वल भविष्य का अनुमान लगाया और इनका परिचय जाना। इसलिए जब इन्होंने हाई स्कूल प्रथम श्रेणी में पास किया और आगे अध्ययन में असमर्थ हो गए तब मैंने आपसे सिफारिश की थी। आपकी छात्रावृत्तियों से जब यह इण्टर और बी. ए. पास हुए तब आपने स्वतः छात्रावृत्ति देकर इनको अमरीका की कोलम्बिया यूनीवर्सिटी में भेज दिया।

गायकवाड : अम्बेडकर आपने अपने आचरण को तो वहाँ दुरुस्त रखा होगा।

डा. अम्बेडकर : महाराज मैं शराब, सिगरेट, सिगार पीता नहीं। हाँ, चाय पीने का आदत जरूर पड़ गई। मैं भारतीय कसरत करता था। इसे सीखने के लिए मेरे कुछ अमरीकी मित्र भी आते थे। वे कभी-कभी मुझे चाय की दावत देते थे, वहाँ मैं जरूर जाता था। वहाँ पुस्तकें ही मेरे मनोरंजन का साधन थीं। अपने आचरण पर मुझे गर्व है।

गायकवाड : आपने अमरीका और इंग्लैण्ड में किन-किन विषयों को पढ़ा ?

डा. अम्बेडकर : कोलम्बिया यूनीवर्सिटी में एम. ए. में मेरे विषय अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, राजनीति और नृवंशशास्त्र थे। इसमें डिग्री प्राप्त कर लेने पर 'ब्रिटिश भारत में प्रान्तीय अर्थ-व्यवस्था का विकास' विषय पर गहन अध्ययन के बाद मैंने थीसिस लिखा। इसी पर कोलम्बिया यूनीवर्सिटी ने मुझे पी-एच. डी.

की उपाधि प्रदान की। इसके बाद भी मेरी ज्ञान पिपासा शान्त नहीं हुई तो मैं लन्दन चला गया। लन्दन जाते समय जहाज पर रखी बहुत-सी पुस्तकें मैंने पढ़ डाली। लन्दन यूनीवर्सिटी ने मुझे सीधे एम. एस-सी. में बैठने की अनुमति प्रदान कर दी। यहाँ भी मैंने इण्डिया ऑफिस, लाइब्रेरी, लन्दन स्कूल और ब्रिटिश म्युजियम की विशाल लाइब्रेरी में अध्ययन करना और नोट तैयार करना जारी रखा। इसी बीच आपके स्टेट के दीवान का पत्र मुझे मिला और मैं अध्ययन अधूरा छोड़कर वापस लौट आया।

गायकवाड : अम्बेडकर जी ! मैं आपकी मेहनत और अध्यवसाय से बहुत प्रसन्न हूँ। आपने मेरे द्वारा दी गई सहायता का सदुपयोग किया। इसकी मुझे बड़ी खुशी है।

केलुस्कर : अम्बेडकर जी, आपको महाराज द्वारा अवसर और साधन देने के कारण ही आप इस स्थान पर पहुँचे हैं।

डा. अम्बेडकर : इसमें शक नहीं। इसके लिए मैं महाराज का सदैव आभारी रहूँगा।

केलुस्कर : अम्बेडकर जी, बड़ौदा में आप कहाँ रुकेंगे ?

डा. अम्बेडकर : मेरे पिता के परिचित जहाँगीर जी, पारसी होटल वाले हैं, अभी तो वहीं रुकूँगा। वाद में कोई मकान मिल गया तो किराये पर ले लूँगा।

केलुस्कर : बड़ौदा में मेरे एक मित्र प्रो. जोशी का मकान खाली है। मैं एक पत्र उनको लिख देता हूँ। आप वहाँ पर भी मकान देख लें।

डा. अम्बेडकर : वड़ी कृपा होगी।

गायकवाड : हाँ अम्बेडकर, अब सहायता की शर्तों के अनुसार आपको बड़ौदा स्टेट की सेवा करनी है। आप अर्थशास्त्र के पण्डित हैं। मैं आगे चलकर आपको अपना अर्थ मंत्री बनाकर स्टेट की हालत ठीक करना चाहता हूँ। इस समय मैंने आपको स्टेट का डिप्टी एकाउण्टेण्ट जनरल नियुक्त करना तय किया है। आप दीवान जी से मिलकर अपने पद का चार्ज ले लें।

डा. अम्बेडकर : महाराज जैसी आज्ञा। मैं यथाशक्ति स्टेट की सेवा करूँगा। मुझसे जो भी हो सकेगा उसमें कसर नहीं रखूँगा। अपने परिश्रम और ईमानदारी से मैं अपने कर्तव्य का निर्वाह करने का प्रयास करूँगा।

(परदा गिरता है)

दृश्य-2

[डा. अम्बेडकर कार्यालय में बैठे हैं। कुर्सी-मेज लगी है। परदा उठता है। कृष्णचन्द्र निंबालकर का आगमन। नमस्कार करता है।]

डा. अम्बेडकर : आप कौन हैं ?

कृष्णचन्द्र निंबालकर : सर, मैं ऑफिस का हेड क्लर्क हूँ।

डा. अम्बेडकर : आपसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मिस्टर निंबालकर पहले मेरे रहने का कोई प्रबन्ध करिए। यहाँ पर प्रो. जोशी रहते हैं, उनके यहाँ आप पता लें। (जेब से एक चिट्ठी निकालकर) इसे उन्हें दे दें। इसके अलावा किसी क्रिश्चियन या मुसलमान का भी मकान मिल जाय तो ठीक है।

कृष्णचन्द्र निंबालकर : अच्छा सर, कल मैं सारा पता लगाकर आपको सूचित करूँगा। (जाता है)

सखाराम जीवनराज मालवीय फाइलों को लिए हुए आता है। वह डा. अम्बेडकर की मेज से कुछ दूर पर खड़े होकर फाइलों को मेज पर फेंकता है। बहुत बचता हुआ चला जाता है। डा. अम्बेडकर उसको देखते रह जाते हैं।

(परदा गिरता है, फिर उठता है।)

[कार्यालय का दूसरा कक्ष, कई बाबू कुर्सियों पर बैठे हैं, कुछ लोग खड़े हैं।]

सखाराम जीवनराज : (प्रवेश करे) साहब लोगों ! मालूम होता है मुझे नौकरी छोड़नी पड़ेगी।

एक बाबू : क्यों जी !

सखाराम जीवनराज : आप जान तो रहे हैं। महाराज ने एक अछूत अफसर को हमारे सर पर बैठा दिया है। फाइल तो लेजाकर मैं दूर से फेंक देता हूँ, लेकिन जब वह फाइल छू लेता है और उसे फिर मुझे ले आना पड़ता है तो बिना स्नान किए मैं पानी नहीं पीता। जाड़े का दिन है। शाम को ऑफिस से लौटने पर नहाना पड़ता है। यही हालत रही तो मैं नौकरी ही छोड़ दूँगा। बे-धरम होकर नौकरी नहीं कर सकता।

दूसरा बाबू : भाई यह तो अच्छा नहीं है। हम लोगों को जाकर अछूत अफसर से नमस्कार करना पड़ता है। अगर यह यहाँ टिक गया तो हमें पता नहीं क्या-क्या करना पड़ेगा। यह तो हिन्दुओं का अपमान है।

तीसरा बाबू : हाँ, कभी आकर उसने ऑफिस का निरीक्षण किया, अगर कोई गलती पकड़ ली तो हम लोगों की बड़ी बेइज्जती होगी।

चौथा : हम लोगों को सभा करके प्रस्ताव पास करके महाराज के पास भेज देना चाहिए कि हम लोग अछूत अफसर के नीचे काम नहीं करेंगे।

मनहर भाई देसाई : इसके अलावा हम लोगों को नगर की जनता के बीच में ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए कि जनता का दबाव भी महाराज पर पड़े कि अछूत अफसर का यहाँ न रहना ही अच्छा है।
(परदा गिरता है, फिर उठता है।)

[कृष्णचन्द्र निंबालकर आता है।]

कृष्णचन्द्र निंबालकर : सर, प्रो. जोशी ने कहा कि डा. अम्बेडकर मेरे यहाँ रह सकते हैं, मैं अस्पृश्यता नहीं मानता। लेकिन मेरी पत्नी पुराने विचारों की है, वह उनका यहाँ रहना पसन्द नहीं करेगी। इसलिए उन्होंने असमर्थता जाहिर की है। पं. रामचन्द्र गोखले आर्यसमाजी नेता के यहाँ गया तो उन्होंने कहा कि मैं तो गुण और कर्म में विश्वास करता हूँ, मुझे तो आपत्ति नहीं है, लेकिन मेरे सभी नौकर भाग जाएँगे। इसलिए उन्होंने विवशता जाहिर की। विलियम जॉन के पास गया तो उसने भी अपनी पत्नी की नाखुशी का बहाना बना दिया। यहाँ पर मुसलमान बहुत गरीब हैं, उनमें से किसी के पास ऐसा मकान नहीं है जो आपको रहने के लिए दे सकें या आप उसमें रह सकें।

डा. अम्बेडकर : अच्छा तुम जा सकते हो।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-3

['जहाँगीर शाह होटल' का बैनर टंगा है। डा. अम्बेडकर होटल से निकलते हैं। 10-15 लोग लाठी लेकर घेर लेते हैं। यह सभी लोग पारसी जाति की वेश-भूषा में हैं।]

डा. अम्बेडकर : कहिए, क्या बात है ?

एक व्यक्ति : तुम कौन हो, जो यहाँ रह रहे हो ?

डा. अम्बेडकर : मैं एक हिन्दू हूँ।

दूसरा : तुम हिन्दू नहीं, अछूत हो। यहाँ से फौरन चले जाओ। हम पारसियों के होटल में तुम रुक गए हो, इससे हमारी जाति की बदनामी होती है।

जहाँगीर निकलते हैं।

जहाँगीर जी : क्यों भाई बता है ?

एक व्यक्ति : तुमने पारसी होटल में एक अछूत को टिका दिया है। इससे पारसी कौम की बदनामी हो रही है। अगर इस व्यक्ति को तुमने यहाँ से नहीं निकाला तो हम लोग तुम्हारा सर तोड़ देंगे और सारी पारसी जाति को तुम्हारे होटल में आने से रोक देंगे।

डा. अम्बेडकर : आप लोग परेशान न हों। मैं खुद ही इस होटल को छोड़ देता हूँ। मुझे आप 8 घण्टे का समय दें।

एक पारसी : ठीक है। तुम 8 घण्टे के बाद फौरन होटल से चले जाओ, नहीं तो हम तुम्हारा सामान वहाँ से निकाल बाहर फेंक देंगे। इसके बाद तुम जानो और तुम्हारा काम।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-4

[डा. अम्बेडकर कार्यालय में घण्टी बजाते हैं। सखाराम जीवनराज आता है।]

सखाराम जीवनराज मालवीय : क्या हुक्म है ?

डा. अम्बेडकर : श्री कृष्णचन्द्र निंबालकर को भेजो।

कृष्णचन्द्र निंबालकर आता है।

डा. अम्बेडकर : निंबालकर बैठ जाओ। मै। एक नोट बोल रहा हूँ। इसे नोट करो और टाइप करके फौरन लाओ।

कृष्णचन्द्र निंबालकर बैठ जाता है—हाथ में कागज-पैन है।

डा. अम्बेडकर :

परम आदरणीय महाराज जी,

सादर अभिवादन,

यह पत्र मैं आपको बड़े ही दुखी हृदय से लिख रहा हूँ। आपने मुझे कृपा कर छात्रावृत्ति देकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। इसे मैं जीवन में कभी नहीं भूल सकता। आपने मुझे बड़ौदा स्टेट में डिप्टी एकाउण्टेण्ट जनरल नियुक्त

किया। मैंने सोचा था कि यहाँ रहकर मैं स्टेट की कुछ सेवा करूँगा, लेकिन ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो गई हैं कि मेरा यहाँ कार्य करना सम्भव नहीं हो पा रहा है। सबसे बड़ी समस्या यहाँ मेरे निवास की व्यवस्था न होने की है। कोई हिन्दू, पारसी, क्रिश्चियन मुझे मकान किराये पर देने को तैयार नहीं है। सरकार की तरफ से यहाँ रहने की कोई व्यवस्था नहीं है। अभी तक मैं एक पारसी होटल में रहता था, लेकिन अब वहाँ रहना भी सम्भव नहीं है। मेरे कार्यालय के कर्मचारी भी जाति के आधार पर भेद-भाव करते हैं। नाना प्रकार की अड़चने खड़ी कर रहे हैं। नगर की जनता को वह मेरे विरुद्ध भड़का रहे हैं। आपके ऊपर भी उनका दबाव पड़ रहा है। हिन्दू धर्म के नाम पर लोग बावेला खड़ा करना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में मैं इस पद पर कार्य कर सकने में असमर्थ हूँ। आपने मेरे ऊपर जो धन खर्च किया है उसका एक-एक पैसा मैं भविष्य में जोड़कर अदा करूँगा। आशा है कि मेरा यह त्याग-पत्र स्वीकृत करने की अनुकम्पा करेंगे।

सेवा में,
माननीय महाराजा
सयाजी राव गायकवाड
बड़ौदा स्टेट

भवदीय,
बी. आर. अम्बेडकर

(परदा गिरता है।)

दृश्य-5

[डॉ. अम्बेडकर, रमाबाई और यशवन्त राव अम्बेडकर बैठे हैं। दो कुर्सियाँ, एक मेज, एक चारपाई है। बहुत-सी किताबें रखी हैं। रमाबाई मराठी स्टाइल की साड़ी-ब्लाउज पहने हैं, यशवन्त राव आठ वर्षीय बालक पैट, हाफ कमीज पहने हैं।]

रमाबाई : आज आप उदास क्यों हैं ?

डा. अम्बेडकर : रामू ! सोचता हूँ हिन्दू धर्म के नाम पर जगह-जगह आगे बढ़ने में अवरोध उत्पन्न किया जा रहा है। महाराज बड़ौदा के यहाँ से डिप्टी एकाउण्टेण्ट का पद मुझे इसलिए छोड़ना पड़ा कि

मुझ अछूत के लिए कोई किराये पर मकान देने को तैयार नहीं है। मैं इससे हिम्मत हारने वाला नहीं। कोई नौकरी मिल जाने पर मैं रुपया इकट्ठा करके अपने बल पर इंग्लैण्ड जाकर और अध्ययन करूँगा।

यशवन्त : पापा जी मैं भी विदेश पढ़ने जाऊँगा। मुझे भी आप बताइए, मैं कैसे आगे पढ़ सकता हूँ ?

डा. अम्बेडकर : बेटा ! तुम्हें तो पढ़ने-लिखने की सुविधाएँ मिल रही हैं, लेकिन फिर भी उसमें तुम अच्छे नम्बर नहीं ला पा रहे हो। मैंने तो बड़ी ही कठिनाइयाँ उठाकर शिक्षा प्राप्त की है।

रमाबाई : जरा आप अपने बचपन की शिक्षा यशवन्त को भी बता दें, जिससे इसे भी कुछ सीख मिले।

डा. अम्बेडकर : यशवन्त ! हमारा जन्म अछूत जाति में महार कौम में हुआ है। हमें हिन्दू धर्म के हिसाब से शूद्र कहा जाता है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों के हिसाब से शूद्र का विद्या पढ़ना वर्जित है। लेकिन मेरे बाबा मालो जी और मेरे पिता रामजी राव अंग्रेजी फौज में अफसर थे। मेरे पिता को फौज में पढ़ने का अवसर मिला और वे फौजी स्कूल में मास्टर हुए। बाद में पिताजी के रिटायर होने पर नौकरी छूट गई। मेरे पिताजी उसके बाद भी मुझे पढ़ाना चाहते थे। लेकिन अछूत होने से कहीं मेरा नाम नहीं लिखा जाता था। तब पिताजी ने सतारा में एक अंग्रेजी सैनिक अफसर से फौजी होने के आधार पर फरियाद की तो स्कूल के अधिकारियों को मेरा नाम लिखना पड़ा। मैं सवर्ण हिन्दू लड़कों के साथ बेंच पर नहीं बैठ सकता था। अपने घर से रोजाना अपने बैठने के लिए टाट ले जाना और ले आना पड़ता था। स्कूल में मैं लंगोटी लगाकर जाता। स्कूल में नल की टोंटी नहीं छू सकता था। यदि कभी कोई लड़का या चपरासी नल की टोंटी न खोलता तो मैं बिना पानी पिये ही रह जाता था। जब तक मास्टर कमरे में चले न जाते मैं बाहर खड़ा रहता था। नाई हमारे बाल नहीं बनाता था। किसी सवारी पर हम बैठ नहीं सकते थे। लेकिन पढ़ने में हम किसी से पीछे नहीं थे।

यशवन्तराव : पिताजी, सवर्ण क्या होता है ?

डा. अम्बेडकर : बेटा, हिन्दू जाति में कुछ लोग अपने को ऊँचा कहते हैं; शूद्र जाति जिसमें हम लोग आते हैं इनका छुआ पानी नहीं पीते,

खाना नहीं खाते, पढ़ने नहीं देते और छूते भी नहीं।

रमाबाई : जरा अपने नाम के बारे में भी तो बेटे को बता दो।

डा. अम्बेडकर : यशवन्त ! मेरी माता का नाम भीमाबाई और पिता का नाम रामजी राव था। इस प्रकार माता-पिता के नाम को मिलाकर मेरा नाम भीमराव रखा गया। चूँकि हमारे दादा मालो जी महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के अम्बावडे गाँव के निवासी थे। इसलिए मेरा नाम भीमराव अम्बावडेकर रखा गया। फिर एक अध्यापक ने जो अम्बेड गाँव के निवासी थे, मुझे उन्होंने अम्बेडकर लिखने को कहा। तब से मेरे नाम के सामने अम्बेडकर लगने लगा।

यशवन्त राव : अच्छा पापा जी, इसीलिए मेरा नाम भी यशवन्त राव अम्बेडकर है।

रमाबाई : हाँ बेटे ! अच्छा अब तुम स्कूल जाओ। तुम्हारे स्कूल का समय हो गया। (यशवन्त बस्ता लेकर पढ़ने जाता है।)

डा. अम्बेडकर : रामू, मुझे रात-दिन चिन्ता लगी है कि मैं इंग्लैण्ड जाकर अपनी शिक्षा पूरी करूँ।

रमाबाई : यदि कोई अच्छी नौकरी यहीं मिल जाती है तो फिर विदेश जाने की क्या जरूरत है ?

डा. अम्बेडकर : रामू, मैं नौकरी करके अपना और अपने परिवार का ही तो भला कर सकता हूँ। इस देश में करोड़ों की तादाद में अछूत कहे जाने वाले लोग जो पशुओं की जिन्दगी जी रहे हैं, उनके लिए भी मैं कुछ करना चाहता हूँ।

रमाबाई : आप जैसा उचित समझें। मैं तो आपकी आज्ञाकारिणी हूँ। पोस्टमैन की आवाज आती है। डा. अम्बेडकर जाते हैं और हाथ में लिफाफा लिए हुए आते हैं। उसे खोलकर पढ़ते हैं।

डा. अम्बेडकर : रामू तुम्हें जानकर खुशी होगी कि मेरी नियुक्ति सिडेनहम कॉलेज बम्बई में प्रोफेसर के स्थान पर हो गई है, इसमें मुझे 450 रु. वेतन मिलेगा।

रमाबाई : चलिए अच्छा हुआ, अब तो हम लोग आराम का जीवन बिताएँगे।

डा. अम्बेडकर : नहीं रामू ! अभी हम आराम का जीवन नहीं बिताएँगे। तुम्हें 50 रु. महीने ही में परिवार का खर्च, खोली का किराया आदि

पर गुजर करना है। शेष रुपये बचाकर मैं इससे इंग्लैण्ड और जर्मनी जाकर अध्ययन करूँगा। घरेलू खर्च के बाद जब मेरे पास इतने रुपये हो जाएँगे कि मैं बाहर जा सकूँ। तब मैं इंग्लैण्ड और जर्मनी जाकर अपनी शिक्षा पूरी करके वापस आऊँगा।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-6

[स्वागत समारोह—मंच पर डा. अम्बेडकर और दो युवक तथा साहू जी बैठे हैं। लाउडस्पीकर लगा है। युवक खड़ा होता है। डा. अम्बेडकर को माला पहनाता है। ताली, जय के नारे।]

युवक : बंधुओं ! आपको मालूम है यह स्वागत समारोह डा. बी. आर. अम्बेडकर के विदेश से लौटने पर आयोजित किया गया है। हमारे चरित नायक पधार चुके हैं। आज की सभा की अध्यक्षता छत्रपति महाराज साहू जी, जो अछूत समाज के बहुत बड़े हितैषी है, करेंगे।

दूसरा युवक : मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

महाराज साहू जी मंच पर बैठते हैं। साहू जी मराठी पगड़ी, अंगरखा पहने हैं। दाढ़ी-मुँहें बड़ी हैं। युवक पहले महाराज को, फिर डा. अम्बेडकर को माल्यार्पण करता है। अब इनका स्वागत दलित हितकारिणी सभा की ओर से दादा गायकवाड जी करेंगे।

दादा गायकवाड : बन्धुओं ! हमारे लिए यह बड़े गौरव की बात है कि दलित समाज में पैदा हुए भीमराव जी अब इंग्लैण्ड और जर्मनी से ऊँची शिक्षा प्राप्त कर लौटे हैं। आप जानते हैं इसके पहले वह कोलम्बिया विश्वविद्यालय से एम. ए., पी-एच. डी. कर चुके थे। इस बार यह लन्दन यूनीवर्सिटी से एम. एस-सी., डी. एस-सी. की डिग्रियों के साथ 'बार-एटला' करके आ रहे हैं। जर्मनी के बार्न विश्वविद्यालय से संस्कृत, जर्मन, फ्रेंच भी सीखकर आए हैं। हमारे देश को डा. अम्बेडकर से बहुत बड़ी आशाएँ हैं। दलित समाज के मसीहा के रूप में हम इनका

हार्दिक स्वागत करते हैं। आशा है इस देश में दलित पीड़ित उपेक्षित मानवों के कल्याण के लिए यह अपनी उच्च शिक्षा का उपयोग करेंगे।

युवक : अब डा. अम्बेडकर अपने विदेश के अध्ययन के सम्बन्ध में अपने अनुभवों को आपके सामने रखेंगे।

डॉ. अम्बेडकर : आदरणीय सभापति जी, भाइयों और बहनों ! आपने यहाँ पर मेरा जो स्वागत किया उसके लिए मैं आप लोगों का बहुत कृतज्ञ हूँ। आपको पता है अछूत कौम में पैदा होने की सबसे बड़ी बाधा शिक्षा प्राप्त करने की है। अमरीका और इंग्लैण्ड में अध्ययन के समय मुझे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी हैं। इंग्लैण्ड में मैंने बड़ी कंजूसी के साथ अध्ययन किया। वहाँ पर मैं एक अंग्रेज महिला के घर पर टिका था। सुबह का नाश्ता मैं वहाँ करता था, दोपहर डबलरोटी-चाय पर कटती थी। शाम को जहाँ भी सस्ता भोजन मिलता था खाकर फिर अपने टिकने के स्थान पर आकर अध्ययन करता था। लगभग 17-18 घण्टे मैं प्रतिदिन पढ़ता था। इस बारे में मैं एक संस्मरण सुनाता हूँ। पुस्तकों को खोजकर पढ़ना मेरा शौक रहा है। मुझे एक बार अपनी थीसिस लिखने के लिए एक पुस्तक की जरूरत थी। वह किसी लाइब्रेरी में नहीं मिली। एक दिन एक पुराने पुस्तक विक्रेता के यहाँ वह पुस्तक मुझे मिल गई। मैंने प्रसन्नता से वह पुस्तक जेब के सारे पैसे देकर उससे खरीद ली। उसे तल्लीन भाव से पढ़ते, मैं एक होटल में जा बैठा। होटल के ब्वाय ने जब सामने खाने की प्लेट रखी तो मुझे ध्यान आया कि मेरे पास तो पैसे नहीं हैं। फिर होटल वाले से माफी माँगकर मैं बिना खाये ही वहाँ से लौट आया। फिर दो दिन तक मुझे पानी पीकर निराहार रहना पड़ा। क्योंकि किताब की जो कीमत थी, उससे मैं दो दिन खाना खा सकता था। मेरे पास फालतू पैसे नहीं थे। इंग्लैण्ड से एम. एस-सी., डी. एस-सी. बार एटला करने के बाद भी मेरी ज्ञान पिपासा शाबान्त नहीं हुई तो मैं जर्मनी के बार्न विश्वविद्यालय चला गया। जर्मन विश्वविद्यालय में दाखिल होने पर मैंने जर्मन और फ्रेंच भाषाएँ पढ़ डालीं और उसी के सहारे जर्मन भाषा के ग्रन्थ पढ़े। जर्मनी ही में मैंने जर्मन भाषा के अध्यापक

से संस्कृत का अध्ययन किया। मैं यहाँ बी. ए. में संस्कृत विषय लेना चाहता था लेकिन अछूत होने के कारण ब्राह्मणों के विरोध के कारण मुझे संस्कृत नहीं पढ़ने दी गई। विवश होकर बी. ए. में फारसी विषय मुझे लेना पड़ा था। जर्मनी में मेरी संस्कृत पढ़ने की लालसा पूरी हुई। मनोयोग से मैंने संस्कृत पढ़ी, फिर वहीं पर मैं जर्मन विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाने को प्रोफेसर भी हो गया। मैंने अब यहाँ आकर बैरिस्टरी करने का निश्चय किया है। आपकी जो भी समस्याएँ आएँगी, उन्हें सुलझाने में मैं आपकी पूरी सहायता करूँगा। जहाँ भी सभा होगी, उसमें चलूँगा।

डा. अम्बेडकर बैठ जाते हैं। उनकी जय के नारे लगते हैं।

युवक : अब सभाध्यक्ष महाराज साहू जी अपना आशीर्वाचन देंगे।

महाराज छत्रपति : भाइयों मुझे खुशी है कि आज आपको डा. अम्बेडकर के रूप में अपना रक्षक नेता मिल गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि डा. अम्बेडकर आपकी अछूतपन की बेड़ियाँ तोड़ डालेंगे और समस्त भारत में अछूतों के त्राता और नेता के रूप में चमक उठेंगे। मेरे योग्य इसके लिए कोई सहायता की जरूरत हो तो मैं उसके लिए तैयार हूँ।

महाराज छत्रपति साहू जी बैठ जाते हैं। तालियाँ बजती हैं।

युवक : अब सभापति जी की आज्ञा से आज की सभा की कार्यवाही समाप्त की जाती है।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-7

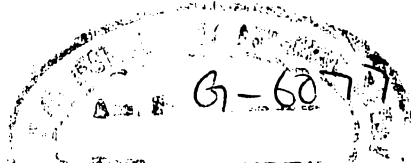
बम्बई हाईकोर्ट का दृश्य

[दो एडवोकेट एक तरफ से और एक एटवोकेट दूसरी तरफ से आते दिखाई पड़ते हैं।]

पहला एडवोकेट : कहो भाई केतकर आज तो कमाल हो गया।

केतकर : कहो, देसाई क्या बात है ?

सखाराम मुंजे : यह भी बताने की बात है। आज हाईकोर्ट ने डा. अम्बेडकर



द्वारा प्रस्तुत किए गए केस में जिसमें कोई जान नहीं थी, उसे लड़कर जीत लेने की चर्चा ही तो आज का विषय है।

देसाई : इस केस को लेकर मुवक्किल पहले यहाँ के बार एशोसिएशन के अध्यक्ष के पास गया था, उन्होंने केस को देखकर इसे लेने से इन्कार कर दिया था।

केतकर : यहाँ के दूसरे नामी एडवोकेट श्री जीवराज मेहता को भी कोई दम नहीं दिखाई पड़ा। इसलिए उन्होंने इसे लेने से इन्कार कर दिया था।

सखाराम मुंजे : भाई दो दिन तक जजों ने डा. अम्बेडकर के तर्क सुने। पता नहीं कहाँ-कहाँ से उन्होंने नजीरें पेश कीं, हम लोग भी उनके मुकदमा लड़ने के ढंग को देखकर दंग रह गए। अन्त में उन्होंने अपने मुवक्किल को फाँसी से बचा ही लिया।

केतकर : हमें याद है जब डा. अम्बेडकर यहाँ आए थे तो उन्हें यहाँ बैठने की जगह नहीं मिलती थी, हम लोग उनकी उपेक्षा करते थे। मुवक्किलों को बहुत-से लोग उनके महार होने के कारण मुकदमा न ले जाने की सलाह देते थे। लेकिन आज उनके इस केस को जीत लेने से वह हीरो हो गए, अब उनके पास मुकदमों के ढेर लग गए।

देसाई : भाई अब भी वे मजदूरों की चाल में एक तंग जगह में रहते हैं, फिर भी इतना अध्ययन है। समय बदल रहा है। (सब जाते हैं।)

डा. अम्बेडकर बैरिस्टर की पोशाक में बैठे हैं। सामने मेज है।

डा. अम्बेडकर : अरे अगरकर ! आज की डाक लाओ। (अगरकर मुंशी फाइल लिए आता है।)

मुंशी : सर, जितने भी पत्र आए हैं, उनको मैंने देख लिया है। उन पत्रों का सारांश मैं बताता चलता हूँ।

डा. अम्बेडकर : हाँ, हर पत्र के बारे में मुझे बताओ।

मुंशी : (एक पत्र देता है) यह पत्र मालावार से आया है, इसमें लिखा है कि सवर्ण जाति के लोगों द्वारा अछूत जाति की स्त्रियों को मजबूर किया जाता है कि वे केवल कमर में कपड़ा लपेटकर चलें और अंग खुला रखें। वे उन्हें भेड़-बकरी की तरह पशु समझते हैं। गरीबी के कारण वह मरे हुए पशुओं का मांस

खाने को मजबूर किए जाते हैं। वह एक कान्फ्रेंस करना चाहते हैं, जिसमें आपका समय चाहते हैं।

डा. अम्बेडकर : इस पत्र को अलग रखो। बाद में समय निश्चित कर वहाँ जाएँगे।

मुंशी : (दूसरा पत्र उठाता है) यह पत्र बिहार के पटना जिले के एक गाँव से आया है। यहाँ के जमींदारों ने मजदूरी माँगने पर पूरी अछूत बस्ती को जला दिया, उसमें चार आदमियों को जिन्दा जला दिया है।

डा. अम्बेडकर : इसे वहाँ के गवर्नर के पास भेजना है। इसे अलग रखो।

मुंशी : यह पत्र उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले के माल थाना के एक गाँव से आया है। यहाँ पर बेगारी न करने के कारण एक अछूत औरत को नंगी करके मारा गया और उसके स्तन काट लिए गए।

डा. अम्बेडकर : इसे भी वहाँ के गवर्नर के पास भेजना है। अन्य पत्रों को पढ़ो।

मुंशी : यह मध्य भारत के सिहोर जिले से आया है। जहाँ पर अछूतों के आने-जाने के रास्ते बन्द कर दिए गए हैं। सामन्त लोग बहुत कम मजदूरी पर काम कराना चाहते हैं।

डा. अम्बेडकर : इसे गवर्नर को भेजना है। (पत्र अलग रखता है। दूसरा पत्र लेकर)।

मुंशी : यह पत्र राजस्थान के जोधपुर से आया है, वहाँ सूदखोर जमींदार ने दस रुपये एक आदमी को कर्ज दिया। उसके सूद के बदले में बाप काम करते-करते मर गया। अब बेटा भी गुलामी कर रहा है। एक कार्यकर्ता ने उसे गुलामी से छुड़ाने को लिखा है।

डा. अम्बेडकर : इसे भी वहाँ के गवर्नर के पास भेजना है।

मुंशी : (मुंशी दूसरा पत्र उठाता है) यह पत्र उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से आया है। जहाँ के अछूतों से उनकी मर्जी के खिलाफ मरे पशु उठाए जाते हैं और पैदा हुए बच्चों के नाल कटवाए जाते हैं।

डा. अम्बेडकर : इसे अलग रखो। (पत्र अलग रखता है। दूसरा पत्र उठाता है।)

मुंशी : यह पत्र केरल के बारकोम गाँव से आया है। वहाँ के अछूत कुछ खास सड़कों पर नहीं चल सकते।

डा. अम्बेडकर : इसे अलग रखो। (पत्र रखता है। दूसरा लेता है।)

मुंशी : यह पत्र कोलाबा जिले के महाद गाँव का है। यहाँ पर सूखा पड़ा है, लेकिन यहाँ के अछूतों का तालाब का पानी पीने नहीं दिया जा रहा है।

डा. अम्बेडकर : इस पत्र को पूरा पढ़ो। (मुंशी पत्र को लेकर पढ़ता है।)

श्रीमान अम्बेडकर जी,

हम अछूतों का जीवन बहुत दुःख में है। इस वर्ष यहाँ पर सूखा पड़ा, जिस तालाब से हम पानी पीते थे, वह सूख गया। हम लोग चोबदार तालाब का पानी पीने गए। हमने सुना है कि सार्वजनिक स्थान पर पानी पीने से रोकना जुर्म है, इसलिए पानी पीने गए तो हिन्दुओं ने हमें पीटा। वे कहते हैं कि इसमें हम लोग नहाते-धोते हैं। यह तालाब वीरेश्वर मन्दिर के पास है। अगर अछूत इसमें पानी पिँएँगे तो इसमें नहाकर हम अपवित्र हो जाएँगे। उनका कहना है कि सरकार ने भले कानून पास कर दिया है लेकिन महारों को इसमें हम पानी नहीं पीने देंगे। हमारे गाय, भैंस, इसमें पानी पीते हैं, अगर अछूत भी इसमें पानी पी लेंगे तो वह जूठा हो जाएगा। वही पानी गाय-भैंस के पीने पर उनके दूध में भी जूठापन आ जाएगा। कृपा कर आप हमारे पानी पीने का प्रबन्ध कराएँ। नहीं तो हमारा जीवित रहना कठिन हो जाएगा।

डा. अम्बेडकर : मुंशी तुम इनको मेरी तरफ से एक टेलीग्राम कर दो कि 19-20 मार्च, 1927 ई. को मैं महाद आ रहा हूँ। वहाँ दलितों की वह एक सभा बुलाएँ। गाँव-गाँव में प्रचार कर दें। मैं चोबदार तालाब का पानी पीने के लिए तैयार स्वयंसेवकों के साथ सत्याग्रह करूँगा। यह सन्देश जनता में पहुँचा दिया जाए।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-8

[महाद सत्याग्रह का बैनर लगा है। सभा का पंडाल सजा है। मंच पर डा. अम्बेडकर तथा कुछ अन्य नेता बैठे हैं। डा. अम्बेडकर की जय के साथ परदा उठता है।]

एक युवक : दलितों के मसीहा डा. अम्बेडकर का हम महाद के दलितों की ओर से स्वागत करते हैं। (उनको माला पहनाता है।) जो लोग

डाक्टर साहब का स्वागत करना चाहते हैं, वे मंच पर आकर उनको माला अर्पित करें। (बहुत-से लोग आकर बाबा साहब के गले में फूलों की माला डालते हैं)

युवक : डा. अम्बेडकर साहब ने हम प्यासों की आवाज सुनकर यहाँ आने की कृपा की है। जैसा आपको मालूम है कि चोबदार तालाब का पानी हमें नहीं पीने दिया जाता। यहाँ सवर्ण उसमें नहाते हैं। हमें जानवर से भी नीचा समझा जाता है। हमें खुशी है कि डाक्टर साहब हमारे कष्टों में शामिल होने आए हैं। अब मैं कुछ न कहकर डाक्टर साहब से ही प्रार्थना करता हूँ कि वे हमें इस कष्ट से छुटकारा दिलाने का कोई रास्ता बताएँ।

डा. अम्बेडकर : (लोग तालियाँ बजाते हैं) महाद के भाइयों, बहनों और उपस्थित सज्जनों ! सबसे पहले तो आपको प्रयत्न करना चाहिए कि आपके बच्चे आपसे अच्छी जिन्दगी व्यतीत करें। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो आप मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं हैं। इसलिए आप अपने बच्चों को पढ़ाएँ। भारत में आदमी-आदमी के बीच खाई बनाकर कुछ को ऊँच और कुछ को नीच बना दिया गया है। दुनियाँ में ऐसा कोई भी समाज नहीं है जिसमें अछूत हों, जिनकी छाया और दृष्टि मात्र से लोग दूषित हो जाते हैं। दुर्भाग्य से ऐसे लोगों की संख्या यहाँ करोड़ों में है। हमें विचार करना चाहिए कि यह हिन्दू सभ्यता भी कोई सभ्यता है। गन्दे को स्वच्छ करना, पतित को ऊँचा उठाना तथा मानवीयता के स्तर तक ले जाना संस्कृति का सच्चा धर्म है, किन्तु इसे हिन्दू समाज ने स्वीकार नहीं किया है।

आपको अपनी दासता स्वयं मिटानी है। इसकी समाप्ति के लिए तुम ईश्वर या अतिमानव पर आश्रित मत रहो। तुम्हारी मुक्ति राजनीतिक शक्ति में निहित है न कि तीर्थयात्राओं और उपवासों में। शास्त्रों के प्रति भक्ति भावना तुम्हें दासता, अभाव और निर्धनता से नहीं बचा सकेगी। तुम्हारे पूर्वज पीढ़ियों से यह काम कर रहे हैं, लेकिन उन्हें कोई राहत नहीं मिली और तुम्हारे दैनिक जीवन में कोई परिवर्तन नहीं लाया। अपने पूर्वजों के समान तुम चिथड़े पहनते हो, उनके समान

तुम रोटी के फेंके हुए टुकड़े पर जीते हो और उन्हीं के समान तुम गन्दे स्थानों पर मृत्यु को प्राप्त कर जाते हो। अभावों, कष्टों और निरादरों से तुम्हें पीड़ित किया जाता है, वह इसलिए नहीं कि वह पूर्व निर्धारित है कि तुमने पूर्व जन्म में कोई पाप किए हैं, बल्कि इसलिए कि तुम चालाकी से दबा दिए गए हो। तुम्हारे पास कोई भूमि नहीं है क्योंकि दूसरों ने उसे तुमसे हड़प लिया है। पूर्व निर्धारित भाग्य में विश्वास मत करो। अपनी शक्ति में विश्वास करो।

अपने अधिकारों की लड़ाई आज हमें महाद से शुरू करनी है। हमने चोबदार तालाब का पानी पीने के लिए सत्याग्रह करने का निश्चय किया है। पाँच सौ लोगों ने इस सत्याग्रह में भाग लेने के लिए नाम लिखाया है। सत्याग्रही लाइनों में चलकर चोबदार तालाब का पानी पीएँगे।

दो लड़कियाँ 'चोबदार का पानी पीने के लिए सत्याग्रह' का बैनर लिए। उनके पीछे डा. अम्बेडकर हैं, कुछ और लोग लाइन में खड़े दिखाई पड़ते हैं। दोनों लड़कियाँ गाती हैं।

गीत

दुःख कितना कहें हम जबानी, हमको मिलता न पीने को पानी।
 पानी जूठा करें जानवर हैं,
 वे जल पीवें न उनको उजर है
 पर अछूतों का छूना जहर है
 उनके पीने पर ढाते कहर हैं,
 जानवर से मनुज नीच जानी। हमको.....
 भेद-भावों से अब हम लड़ेंगे,
 चोबदार का जल पी रहेंगे,
 अपने अधिकार लेके रहेंगे
 नहीं मरने से अब हम डरेंगे,
 कष्ट कुछ भी हो हमने है ठानी ॥ हमको.....

डा. अम्बेडकर : सब लोग जुलूस में चलकर चोबदार तालाब का पानी पीएँ।

जुलूस चलता है और परदे की आड़ में चला जाता है। एक व्यक्ति जो धोती पहने नंगे बदन है। मोटी चोटी है, जनेऊ पहने है एक थालीनुमा चीज पीटते हुए आता है।

व्यक्ति : सुना भाइयों, सुनो ! महा अनर्थ हो गया। (बहुत-से लोग आ जाते हैं।) अछूतों ने चोबदार तालाब का पानी पीकर उसे जूठा कर दिया है। धर्म की रक्षा करो। (कुछ लोग लाठी लिए दिखाई पड़ते हैं।) चोबदार को गन्दा कर दिया अब वीरेश्वर का मन्दिर भी अपवित्र कर देंगे। इन अछूतों को सबक सिखा दो। (लोग मारो-मारो कर दौड़ते हैं। पंडाल को तोड़ देते हैं। जो सत्याग्रही दिखाई पड़ते हैं, उन पर लाठी चलाते हैं। कुछ के सर से खून भी बहता दिखाई पड़ता है। डा. अम्बेडकर को भी चोट लगी है।)

एक युवक बाबा साहब से।

युवक : डाक्टर साहब, अगर आप हमें आज्ञा दें तो हम इनको मजा चखा दें। हमसे यह अन्याय बर्दाश्त नहीं हो पा रहा है।

डा. अम्बेडकर : दोस्तों ! हम सत्याग्रह करने आए हैं, बदला लेने नहीं। दुनियाँ इन हिन्दुओं का अन्याय देख ले। चलो अब महाद थाने पर चलकर इस घटना की रिपोर्ट करते हैं। (जाते हैं)

कुछ हिन्दू दिखाई पड़ते हैं जिनके माथे पर चन्दन तिलक है।

एक व्यक्ति : इस तालाब का पानी कैसे शुद्ध किया जाएगा ?

पहला व्यक्ति : हमारे शास्त्रों में कई विधान हैं। पहले इस तालाब से सब लोग 108 घड़े पानी को बाहर ले जाकर गिरा देंगे। फिर 11 नये घड़ों में इसका पानी भरकर उसमें पंचगव्य मिलाकर मन्त्र पाठ करके इस जल को इस तालाब में गिरा देंगे। इस तरह इस तालाब का जल शुद्ध हो जाएगा। आप लोग 108 घड़े लेकर आवें। 11 नये घड़ों और पंचगव्य की व्यवस्था मैं करूँगा।

(परदा गिरता है, उठता है।)

[कुछ लोग मंच पर घड़े लिए बैठे दिखाई पड़ते हैं। कई नंगे बदन, गेरुआ वस्त्र, जनेऊ पहने दिखाई पड़ते हैं। कुछ लोग संस्कृत के श्लोक पढ़ रहे हैं।]

शान्ताकारं भुजंगं शयनम् पद्मनामं सुरेशम् ।

लक्ष्मी कान्तम कमलनयनेम योगिमिध्यानशम्यम्

बन्दे विष्णु भव-भव हरम्, सर्वं लाकेक नाथम् ॥

एक पुजारी : अब इन घड़ों के जल को लेजाकर तालाब में डाल दो। (कुछ लोग घड़ों को ले जाकर वापस आते हैं। इतने में एक पुलिस इंस्पेक्टर और कुछ सिपाही दिखाई पड़ते हैं।)

पुलिस इंस्पेक्टर : (हिन्दुओं से) आप लोग रुकें। आप लोगों ने कानून का उल्लंघन किया है। आप जानते हैं बम्बई विधान परिषद् ने कानून पास किया है कि सार्वजनिक स्थानों का उपयोग सभी लोगों को करने का अधिकार है। आप लोगों ने चोबदार का पानी पीने पर सत्याग्रहियों की पिटाई की है, दंगा किया है, इसलिए आप पर जुर्म बनता है। सभी लोग थाने पर चलें। सिपाहियों इनको थाने ले चलो।

एक पुजारी : यह तालाब तो हम लोगों का है।

इंस्पेक्टर : सार्वजनिक स्थानों में यह भी आता है। हम मजिस्ट्रेट की आज्ञा से आप सबको गिरफ्तार करते हैं। (उन्हें ले जाता है।)
(परदा गिरता है।)

‘कालाराम मन्दिर नासिक’ का बैनर लगा है। दो-तीन गेरुआधारी मस्तक पर चन्दन तिलक लगाए व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, डा. अम्बेडकर और उनके साथ कुछ लोग आ जाते हैं।

पुजारी : आप लोग यहाँ क्यों इकट्ठे हैं ?

डा. अम्बेडकर : हम लोग यहाँ कालाराम का दर्शन करने आए हैं। हम कालाराम का रथ भी खींचेंगे और गोदावरी में स्नान भी करेंगे।

एक पुजारी : तुम अछूत लोग कालाराम का दर्शन कर, रथ खींचकर और गोदावरी में स्नान कर हिन्दुओं की बराबरी करना चाहते हो।

दूसरा पुजारी : हम ऐसा कदापि नहीं होने देंगे। ऐसा होने पर भगवान कालाराम अपवित्र हो जाएँगे और गोदावरी का जल भी अशुद्ध हो जाएगा।

डा. अम्बेडकर : आज हम दर्शन करके ही जाएँगे। (साथियों के साथ चले जाते हैं।)

दूसरा पुजारी : मेरी राय है कि कालाराम मन्दिर रथ-यात्रा और गोदावरी घाट पर अपने लट्टबाज लोगों को तैनात कर दिया जाय, अगर अछूत दर्शन करने, रथ छूने और गोदावरी में स्नान करने का प्रयास करें तो वहीं उनकी पिटाई की जाय।

पहला पुजारी : हम लोगों को पुलिस से भी मदद लेनी चाहिए। नासिक का

पुलिस इंस्पेक्टर मेरा रिश्तेदार है, उनको सन्देश भेज रहा हूँ, वह भी पुलिस वालों को भेजकर इसमें हमारी मदद करेंगे।

(परदा गिरता है, फिर उठता है।)

[डा. अम्बेडकर अपने अनुयायियों के साथ दिखाई पड़ते हैं।]

डा. अम्बेडकर : भाइयों ! अपने कार्यक्रम के अनुसार अब हमें पंक्तिबद्ध होकर कालाराम के दर्शन करने चलना चाहिए। हो सकता है इस कार्यक्रम में हमें लाठियाँ पड़ें, हमें चोटें भी आएँ, लेकिन आप लोग इसका बदला मारपीट से न लें। आपके ऊपर जितनी भी लाठियाँ पड़ेंगी, वह आपके ऊपर ही नहीं, बल्कि हिन्दू धर्म के ऊपर उनका प्रहार होगा। हम इन हिन्दुओं के अन्याय को दूसरे धर्म वालों और दुनियाँ को दिखाना चाहते हैं।

एक युवक : डाक्टर साहब मेरा विश्वास तो किसी देवी-देवता के दर्शन-पूजन में नहीं है। मैंने सुना कि इस मन्दिर प्रवेश की अगुवाई आप करेंगे इसलिए चला आया। क्या आप भी मन्दिर में दर्शन-पूजन करेंगे ?

डा. अम्बेडकर : मेरे दोस्त, आज हम यहाँ पूजा करें या न करें, इसका प्रश्न नहीं है। प्रश्न है अपने अधिकारों के लिए लड़ने का। अगर लोग हमें हिन्दू समझते हैं तो हमारा भी बराबर का अधिकार मन्दिरों में जाने, दर्शन-पूजन करने और गोदावरी में नहाने और कालाराम का रथ खींचने का है। हम यह जानते हैं कि इससे कुछ होने वाला नहीं है, लेकिन हम तो बराबरी की लड़ाई लड़ने चल रहे हैं और हम हिन्दू धर्म की दुनियाँ के सामने नंगा कर देना चाहते हैं।

नवयुवक : डाक्टर साहब ! आपके विचार ठीक हैं। इस संघर्ष में मैं भी सम्मिलित होने का तैयार है।

डा. अम्बेडकर : अब सभी लोग मन्दिर दर्शन के लिए प्रस्थान करें। (एक जुलूस चलता है।)

(परदा गिरता है, फिर उठता है।)

[कुछ लोग लाठी लिए दिखाई पड़ते हैं। जुलूस से आवाज आती है। हम कालाराम के दर्शन करेंगे।]

पुजारी : तुम अछूतों का भगवान कालाराम के दर्शन का अधिकार नहीं है।

जुलूस से एक : (लड्डधारियों से) तुम लोग क्या देखते हो। कालाराम का पट

व्यक्ति बन्द कर दो और इनको पीटकर यहाँ से हटा दो। (सत्याग्रहियों की पिटाई होती है। कुछ को चोटें आती हैं, कुछ गिर जाते हैं।)

(परदा गिरता है, फिर उठता है।)

डा. अम्बेडकर : साथियों ! कालाराम का रथ उठने वाला है, वहाँ चलकर रथ खींचो।

मंच पर एक रिक्शा सजा है, उस पर एक मूर्ति रखी है। तीन-चार लोग गडसे खींचने का प्रयोजन करते हैं। डा. अम्बेडकर के साथ दो-तीन लोग आते हैं, वे भी रथ में हाथ लगाने का प्रयास करते हैं।

मुख्य पुजारी : देखो अछूतों ने रथ छू दिया, मारो इनको।

एक पुलिस सिपाही अछूतों पर लाठी चलाता है, एक व्यक्ति गिर पड़ता है।

मुख्य पुजारी : अछूतों ने रथ भी अपवित्र कर दिया। पुजारी से कहो वह कालाराम मन्दिर में ताला लगा दें। भगवान का रथ भी इन लोगों ने छू लिया है इसलिए इसे अब यहीं रोक दो। (नेपथ्य से आवाज आती है, अछूत गोदावरी में स्नान कर गोदावरी में स्नान कर गोदावरी के जल को भी अपवित्र कर रहे हैं।) सुनो लठैतों ! जो लोग गोदावरी में नहाकर उसके जल को अपवित्र कर रहे हैं, उनसे गोदावरी की पवित्रता की रक्षा करो। घाट पर जाओ, जो अछूत स्नान कर रहे हों उनकी पिटाई करो। (लठधारी और पुजारी जाते हैं।) (कई लोग रोते हुए आते हैं।) अरे आतताइयों ने मार डाला। (कुछ के सर पर खून बह रहा है।) चलो बाबा के पास, अब वे क्या कहते हैं। (जाते हैं।)

(परदा गिरता है, फिर उठता है।)

[बाबा साहब अपने अनुयायियों के साथ दिखाई पड़ते हैं।]

डा. अम्बेडकर : आप लोगों ने चोबदार तालाब में पानी पिया। आपमें से कुछ को चोटें आईं। आप कालाराम का दर्शन करने आए, मन्दिर में अब ताला लग गया है। कोई दर्शन करने नहीं जा पा रहा है। कालाराम का रथ खींचने का भी हमने प्रयास किया। कुछ लोगों को यहाँ भी चोटें आईं। यह हमारे सामाजिक संघर्ष की शुरुआत है। हम दुनियाँ को दिखा देना चाहते हैं कि एक

तरफ हमें हिन्दू कहा जाता है, दूसरी तरफ हिन्दू ही हमारे साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं। साथियों ! हमारी यह सामाजिक लड़ाई चलती रहेगी। इसी के साथ हमें राजनीतिक मोर्चे पर भी लड़ना है। मुझे पता चला है कि साइमन कमीशन ने जो रिपोर्ट दी है उसमें अल्पसंख्यकों के पृथक् प्रतिनिधित्व की माँग मान ली गई है, लेकिन अछूतों के पृथक् प्रतिनिधित्व की बात नहीं मानी गई है। इसलिए अब यहाँ से आप अपने घरों को जाएँ। बड़ी-बड़ी सभाएँ कर अछूतों के पृथक् प्रतिनिधित्व की माँग करें। लन्दन में गोलमेज सम्मेलन होने वाला है उसमें मैं इस माँग को उठाऊँगा।

(परदा गिरता है।)

द्वितीय अंक

दृश्य-1

[गोलमेज सम्मेलन का दृश्य, एक मेज है, उसके चारों तरफ कुर्सियों पर महात्मा गांधी, मदनमोहन मालवीय, सरोजनी नायडू, डा. अम्बेडकर, मुहम्मद अली जिन्ना और सिख प्रतिनिधि तथा इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री रैमजे मैकडोनाल्ड बैठे हैं। महात्मा गांधी बना पात्र सर के बाल को दस्ती से बाँधे हैं। नंगे बदन घुटने तक धोती-चप्पल पहने, चश्मा लगाए, लाठी लिए हैं। मदनमोहन मालवीय धोती, लम्बा कुरता, साफा बाँधे, मस्तक पर तिलक लगाए हैं। सरोजिनी नायडू साड़ी में है। डा. अम्बेडकर सूट, टाई, कोट, चश्मा, मोजे-जूते पहने हैं। मुहम्मद अली जिन्ना सूट पहने, बड़े-बड़े बाल हैं, सिगरेट पी रहे हैं। सर पर बालदार टोपी है। एक सिख वेष का पात्र तथा रैमजे मैकडोनाल्ड भी अंग्रेजी पोशाक में हैं, उनके सर पर हैट है।]

रैमजे मैकडोनाल्ड : गोलमेज सम्मेलन में आए हुए मित्रों, मुझे खुशी है कि आप लोग मेरे बुलाने पर इस गोलमेज सम्मेलन में आए हैं। आपको मालूम हो कि हम अब इण्डिया की सत्ता को इण्डियंस को सौंपना चाहते हैं, लेकिन हम वह सत्ता किसे दें। वहाँ के लोग आपस ही में लड़ रहे हैं। मुसलमान कहते हैं कि हिन्दुस्तान की सत्ता देते समय उसमें से मुसलमानों का हक अलग कर दिया जाय। वहाँ के अछूत कहते हैं कि हिन्दू हम कहने के लिए भले हैं, लेकिन हमारे साथ हिन्दू ही मनुष्यता का व्यवहार नहीं करते हैं। इसी प्रकार ईसाई, सिख तथा रजवाड़े भी कह रहे हैं। इसलिए आप लोग मिलकर कोई रास्ता निकालें। यह गोलमेज कॉन्फ्रेंस की रिपोर्ट आपके सामने रख दी गई है। अब आप लोग इस सम्बन्ध में अपने विचार रखें।

महात्मा गांधी : प्रधान मन्त्री और मित्रों ! पहली गोलमेज कॉन्फ्रेंस में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व नहीं था। उस रिपोर्ट में अछूतों के अलग प्रतिनिधित्व की सिफारिश देखकर मुझे दुःख हुआ। कांग्रेस ने

आरम्भ से ही अछूतोद्धार का काम लक्ष्य में रखा है और सन् 1929 ई. से तो उसने अछूतपन मिटाने का एक राजनीतिक कार्यक्रम बना लिया है। इसलिए यह हमारा घरेलू मसला है जिसे सुधारने में हम लगे हैं। इसलिए मैं अछूतों के अलग प्रतिनिधित्व देने का विरोध करता हूँ।

डा. अम्बेडकर : प्रधान मन्त्री और मित्रों ! पिछली कान्फ्रेंस में मैं कह चुका हूँ कि जिन अछूतों का प्रतिनिधित्व मैं करता हूँ, भारत में उनकी जनसंख्या वहाँ की जनसंख्या का पाँचवाँ भाग है अर्थात् इंग्लैण्ड या फ्राँस की जनसंख्या के बराबर ! परन्तु मेरे उन अछूत भाइयों की स्थिति गुलामों से भी बदतर है। गुलामों के मालिक तो उनको छूते थे, परन्तु भारत में उनको छूना भी पाप समझा जाता है। आज अछूत भी मौजूदा राज्य के स्थान पर जनता द्वारा संचालित जनता का राज्य चाहते हैं। मजदूरों और किसानों का शोषण करने वाले पूँजीपतियों और जमींदारों की रक्षक सरकार हम नहीं चाहते। दुःख हम स्वयं दूर करेंगे। इसके लिए हमारे हाथों में राज्यसत्ता होनी चाहिए। इस बार समिति में केवल यह तय होना है कि प्रत्येक स्थान में अछूतों का कम-से-कम कितना प्रतिनिधित्व होना चाहिए। गांधी जी को अछूतों की ओर से कोई समझौता करने का अधिकार नहीं है, न किसी दल ही को अछूतों के सम्बन्ध में उनसे समझौता करना चाहिए।

महात्मा गांधी : प्रधान मन्त्री और मित्रों ! मुझे दुःख और नम्रता के साथ साम्प्रदायिक समझौते की असफलता के सम्बन्ध में कहना पड़ता है। समझौते की असफलता का मुख्य कारण प्रतिनिधित्व में है। विभिन्न दलों के जो प्रतिनिधि यहाँ आए हैं, वे उन दलों के चुने हुए प्रतिनिधि नहीं हैं, सरकार के नामजद किए हुए हैं।

डा. अम्बेडकर : प्रधान मन्त्री और मित्रों ! यह मान लिया गया था कि जब हममें किसी को ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए जिससे दूसरों पर आघात हो। मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि गांधी जी ने समझौते का उल्लंघन किया है। गांधी जी अपने आपको और कांग्रेस को अछूतों का प्रतिनिधि कहते हैं। मैं इस दावे का यही उत्तर देना चाहता हूँ कि गांधी जी भारत

के किसी क्षेत्र से मेरे मुकाबले चुनाव लड़ लें तो वे सत्य पर आ जाएँगे। मुझे अभी एक तार मिला है (जब से निकालकर) जहाँ मैं कभी नहीं गया न देने वाले को कभी देखा है। यह तार सभापति डिप्रेस्ट क्लासेस यूनियन कुमायूँ अलमोड़ा की ओर से है। देखिए इसमें क्या लिखा है—यह सभा कांग्रेस के उस आन्दोलन पर अविश्वास प्रकट करती है, जिसे कांग्रेस द्वारा इस देश में तथा इस देश के बाहर किया जा रहा है। कांग्रेस का तरीका बिल्कुल गलत है। यूनियन को आपके प्रतिनिधित्व पर विश्वास है। प्रधान मन्त्री जी ! ब्रिटिश सरकार यदि शासन सत्ता भारतीयों को सौंपना चाहती है, तो मैं यह कह देना चाहता हूँ कि शासनाधिकारी केवल एक दल के हाथों में चाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान कदापि न होना चाहिए। भारत में जितने सम्प्रदाय या दल हैं उन सब में संघशासन के अधिकारों का बँटवारा उनकी जनसंख्या के अनुपात से होना चाहिए।

मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना : प्रधान मन्त्री और मित्रों ! जहाँ तक मुसलमानों का सवाल है उन्हें हिन्दुओं से अलग रिप्रेजन्टेशन तो मिलना ही चाहिए। जब हिन्दू लोग हिन्दू धर्म मानने वाले अछूतों के साथ ही इस तरह का बर्ताव करते हैं तो मुसलमानों का तो अलग धर्म और अलग तहजीब ही है। उनके साथ तो मालूम नहीं कैसा बर्ताव किया जाए।

महात्मा गांधी : प्रधान मन्त्री और मित्रों ! आज अल्पसंख्यक समिति की जो रिपोर्ट पेश की गई है उसमें अल्पसंख्यक जातियों के साथ ही अछूतों को भी पृथक् प्रतिनिधित्व देने की सिफारिश की गई है। मेरे लिए यह सबसे अधिक निर्दय आघात है। सिख सदैव के लिए सिख और मुसलमान सदैव-के लिए मुसलमान रह सकते हैं, लेकिन अछूत भी सदा के लिए अछूत रहें, इस बात को मैं भला नहीं मानूँगा। मैं यह नहीं सह सकता कि हिन्दुओं में ही दो भाग हो जाएँ। इस बात का विरोध करने वाला यदि मैं अकेला भी रहा तो भी मैं अपने प्राणों की बाजी लगाकर इसका विरोध करूँगा।

डा. अम्बेडकर : प्रधान मन्त्री और मित्रों ! गांधी जी के उक्त विचार का मैं घोर विरोध करता हूँ। यद्यपि मैंने उच्च शिक्षा प्राप्त की है, किन्तु

हिन्दू समाज में मैं अब भी अछूत हूँ। शिक्षा मुझे अछूतपन से बाहर नहीं कर सकती। (पं. मदनमोहन मालवीय की तरफ देखते हैं।)

मदनमोहन मालवीय : मैं आपसे माफी चाहता हूँ, आप अछूत नहीं हैं, आप हमारे प्यारे दोस्त और भाई हैं। आपके साथ कट्टर सनातनी भी खुशी से काम करेंगे। आप जानते हैं, अछूतों की भलाई के लिए आज भी किसी अन्य जाति की अपेक्षा ब्राह्मण ही अधिक काम कर रहे हैं।

डा. अम्बेडकर : आप भी जानते हैं, हमें अछूत बनाने में भी ब्राह्मणों का ही सबसे बड़ा हाथ रहा है।

रैमजे मैकडोनाल्ड : भारतीय मित्रों ! ढाई महीने से दूसरी गोलमेज कॉन्फ्रेंस चल रही है, आप लोग सत्ता की भागीदारी में मुख्यतः अछूतों के प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में एकमत नहीं हो सके। मैंने आप सबकी बातें सुन ली हैं, अब आप लोग एक-एक दरखास्त पर दस्तख्त कर मुझे दे दें, जिसमें साम्प्रदायिक समस्या हल करने की जिम्मेदारी मुझे दे दें, किन्तु शर्त यह है कि सभी मेरे निर्णय को मानने को बाध्य होंगे।

सब लोग : हमें यह स्वीकार है।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-2

[सरोजनी नायडू, मदनमोहन मालवीय और सर तेजबहादुर सपू बैठे हैं।]

सरोजनी नायडू : मालवीय जी ! ब्रिटिश प्रधान मन्त्री रैमजे मैकडोनाल्ड ने गोलमेज कॉन्फ्रेंस के आधार पर कल 20 अगस्त, 1932 ई. को अपना कम्युनल एवार्ड घोषित कर दिया है। जिसमें मुसलमानों और सिखों के साथ ही शेडयूल्ड कास्ट को भी पृथक् निर्वाचन के अधिकार को मान्यता दे दी है।

मदनमोहन मालवीय : हम लोगों ने तो अछूतों को पृथक् निर्वाचन के लिए विरोध किया था। गांधी जी ने गोलमेज कॉन्फ्रेंस में ही कह दिया था कि अछूत हिन्दू समाज के अंग हैं। मुसलमानों और सिखों को भले पृथक् निर्वाचन का अधिकार दे दिया जाय, किन्तु अछूतों

को नहीं। फिर भी अंग्रेजों ने अछूतों को पृथक् निर्वाचन का अधिकार दे दिया। गांधी जी ने भी इसकी प्रतिक्रिया में कल ही घोषणा कर दी है कि अछूतों को पृथक् निर्वाचन का अधिकार दिए जाने के विरोध में वह यरवदा जेल में ही 20 सितम्बर से आमरण अनशन करेंगे।

सर तेजबहुदर सप्रू : अगर डा. अम्बेडकर अपनी पृथक् निर्वाचन की माँग पर अड़े रहे तो गांधी जी के जीवन पर संकट आ सकता है। इसलिए सभी कांग्रेस के बड़े नेताओं को कहा जाए वे 20 सितम्बर से पहले पूना में मौजूद रहें। हम लोग डा. अम्बेडकर को समझाने का प्रयास करेंगे।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-3

[महात्मा गांधी जेल में फर्श पर एक चादर पर गाँवतकिये के सहारे बैठे हैं। साथ में पं. मदनमोहन मालवीय तथा अन्य कई नेता बैठे हैं।]

महात्मा गांधी : कांग्रेस के विरोध के बावजूद अंग्रेजों ने अछूतों को सत्ता में पृथक् प्रतिनिधित्व का अधिकार मान लिया। मैंने ब्रिटिश प्रधान मन्त्री को इस यरवदा जेल से पत्र भेजा था, किन्तु इसमें वह परिवर्तन नहीं करना चाहते। इसलिए मैं आज 20 सितम्बर से आमरण अनशन आरम्भ करता हूँ।

मदनमोहन मालवीय : इस अनशन के सम्बन्ध में देश के लोगों को क्या समझाया जाय ?

महात्मा गांधी : अछूतों के नेताओं पर हम यह दबाव डालें कि वह अपने पृथक् निर्वाचन की माँग का परित्याग कर दें, इसके बदले कांग्रेस के लोगों का प्रयास होना चाहिए कि वे अस्पृश्यता निवारण के काम में जुट जाय। मन्दिर और कुएँ जो उनके लिए बन्द हैं, उन्हें खुलवाने का प्रयास करें। मैं स्वयं भी जेल से निकलने के बाद देश भर में अस्पृश्यता के विरुद्ध प्रचार करूँगा। लोगों से इस कार्य के लिए चन्दे, माँगूंगा। छुआछूत निवारण के लिए उनके सुधार के लिए एक संस्था की स्थापना करके हिन्दू समाज से अस्पृश्यता के कोढ़ को

दूर करने का प्रचार करूँगा।

मदनमोहन मालवीय : गांधी जी डा. अम्बेडकर पर प्रभाव डालने के लिए सर तेजबहादुर सप्रू को आप बुला लें, क्योंकि गोलमेज कॉन्फ्रेंस में वह डा. अम्बेडकर के विचारों के समर्थक और उनके बहुत निकट हैं।

महात्मा गांधी : मालवीय जी आपने अच्छी याद दिलाई। सप्रू को इस आशय का तार भेजकर तुरन्त बुलवाइए।

सेक्रेटरी : महात्मा जी तार का विषय बोल दें।

महात्मा गांधी : जन्म से मैं एक सवर्ण हिन्दू हूँ, किन्तु अपनी इच्छा से मैं एक अछूत हूँ। मैंने इस जहरीले प्याले का अन्तिम घूट पी लिया है। मौत और जिन्दगी के बीच एक छोटी-सी जगह से मैं आपको लिख रहा हूँ। जब मैंने देखा अछूत हिन्दुओं से पृथक् जाएँगे तब मेरी आत्मा ने पार्थक्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, जिस चीज के लिए मैं जिन्दा रहूँगा वह है अस्पृश्यता को निर्मूल कर देने। अतः मैं चाहता हूँ कि अछूतों और हिन्दुओं में एक समझौता हो जाय जिस पर आज से ही अमल शुरू हो जाय। मैं चाहता हूँ समझौते के बाद ही एक सभा हो जिसमें हिन्दू और अछूत आपस में गले मिलें। यह आमरण अनशन मैं इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि मैं ईश्वर की आज्ञा में पूर्ण विश्वास रखता हूँ। इस कार्य में आपका सहयोग अपेक्षित है।

एक व्यक्ति : (हाथ में अखबार लिए आता है) महात्मा जी आज के अखबार में डा. अम्बेडकर का वक्तव्य निकला है।

महात्मा गांधी : पढ़कर सुनाओ।

वह व्यक्ति : मैं राजनीतिक झँसों की परवाह नहीं करता, यदि गांधी जी हिन्दू समाज के हितों के लिए प्राणों की बाजी लगाकर लड़ना चाहते हैं तो अछूत समाज भी मजबूरन अपने हितों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाकर लड़ेगा। गांधी जी के आमरण अनसन, उपवास की घोषण अछूतों के हितों के विरुद्ध है। गांधी जी का जीवन बचाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रयत्न करना चाहिए, किन्तु एक बात निश्चित है कि गांधी जी के प्राण बचाने के दबाव में अछूतों के हितों के विरुद्ध मैं कोई प्रस्ताव स्वीकार करने को तैयार नहीं हूँ।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-4

[डा. अम्बेडकर भी निवासन एम. सी. राजा और पिल्ले अछूत नेता फर्श पर बैठे हैं, बीच में एक छोटी मेज है।]

श्रीनिवासन : मित्रों ! गांधी जी के अनशन से हिन्दुओं का नाटक शुरू हो गया है। दलितों के साथ सहभोज हो रहे हैं, मन्दिरों के द्वारा खुल रहे हैं, छुआछूत दूर करने की बात की जा रही है।

पिल्ले : इससे कुछ नहीं होने वाला है। गांधी जी अपने को हिन्दू कहते हैं, हिन्दू धर्म का मूल जाति-व्यवस्था है और जाति-व्यवस्था का मूल वर्ण-व्यवस्था नष्ट नहीं होती है, तब तक समाज में कोई परिवर्तन होने वाला नहीं है।

डा. अम्बेडकर : इलाहाबाद में पूज्य स्वामी अछूतानन्द की अध्यक्षता में उत्कमांड में श्रीमुनि स्वामी पिल्ले एम. एल. सी. के सभापतित्व में तथा अन्य सूबों से अछूतों की सभाओं से बराबर तार मिल रहे हैं कि पृथक् प्रतिनिधित्व की बात को न छोड़ा जाए।

एम. सी. राजा : इधर हिन्दुओं के अखबार आकपे विरुद्ध जहर उगल रहे हैं। गांधी जी के अनशन को लेकर देश भर में तहलका मच गया है और आपको देशद्रोही गद्दार तक कहा जा रहा है।

डा. अम्बेडकर : मैं जानता हूँ, मेरी स्थिति को देश में कभी अच्छी तरह नहीं समझा गया। मैं यह कहता हूँ कि जब कभी भी मेरे व्यक्तिगत हितों और देश के हितों के बीच कोई विरोध पैदा हुआ तो मैंने सदैव अपने देश के हितों को अपने हितों से ऊपर रखा है। जहाँ तक देश की माँगों का प्रश्न है, मैं कभी भी पीछे नहीं रहा। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं उसी की माँग करूँगा जो मेरे लोगों के लिए हितकर है और मैं निश्चित रूप से स्वराज की माँग के प्रति अडिग रहूँगा।

एक कार्यकर्ता का प्रवेश।

कार्यकर्ता : डाक्टर साहब, अपने सर तेजबहादुर सप्रू, डा. जयकर और श्री राजगोपालाचारी मिलना चाहते हैं।

डा. अम्बेडकर : उन्हें लिवा लाओ।

वह जाता है। डा. जयकर, श्री राजगोपालाचारी, सर तेजबहादुर सप्रू का प्रवेश। अन्य लोग खड़े हो जाते हैं। नमस्ते के बाद सभी बैठते हैं।

सर तेजबहादुर सप्रू : डा. साहब आप गांधी जी के प्राणों को बचाएँ। आज का अखबार आपने देखा होगा। गांधी जी की दशा खराब होती जा रही है। आप अपने पृथक् निर्वाचन की माँग में कुछ संशोधन कर लें।

डा. अम्बेडकर : किस तरह ?

सर तेजबहादुर सप्रू : प्रथक् निर्वाचन और संयुक्त निर्वाचन के मध्य का मार्ग यह है कि पहले दलित जाति के लोग रिजर्व सीट के लिए अपने द्वारा तीन व्यक्तियों की एक सूची तैयार करेंगे। उस सूची में से सब लोग संयुक्त निर्वाचन द्वारा एक व्यक्ति का चुनाव कर लेंगे। इसकी अवधि आप 15 वर्ष चाहते हैं, गांधी जी 5 वर्ष। मैं समझता हूँ यह अवधि 10 वर्ष होनी चाहिए तथा पंजाब में भी 8 सीटें अछूतों के लिए रिजर्व रहेंगी। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने अछूतों के लिए जो सीटों की संख्या 71 की थी, वह रिजर्व सीटें भी बढ़कर 148 हो जाती हैं। साथ ही कांग्रेस अस्पृश्यता निवारण सभी सरकारी, अर्द्ध सरकारी नौकरियों में योग्यतानुसार यथासम्भव भरती, शिक्षा पर पर्याप्त खर्च व्यय के विषय की जिम्मेदारी कांग्रेस लेगी।

बाहर से आवाज : गांधी जी के प्राण बचाओ। दो तीन चार नारे लगते हैं।

सेवक का प्रवेश।

सेवक : डाक्टर साहब कुछ महिलाएँ आना चाहती हैं।

डा. अम्बेडकर : उन्हें आने दो।

कुछ महिलाएँ आती हैं।

सर सप्रू : अच्छा आप लोग हैं। खड़े होते हैं। सभी खड़े हो जाते हैं।

डा. अम्बेडकर इनका परिचय आपको कराता हूँ। (एक महिला की ओर संकेत करके) यह हैं कमला नेहरू, श्री जवाहरलाल नेहरू की पत्नी। पं. नेहरू इन दिनों अस्वस्थ हैं, इसलिए कमला जी ही यहाँ आई हैं। (दूसरी महिला की ओर संकेत करके) यह हैं श्रीमती हंसा मेहता जो अभी कुछ दिनों पूर्व ही भारत के प्रतिनिधि के रूप में अमरीका के विश्व महिला सम्मेलन से भाग लेकर लौटी हैं। (तीसरी महिला की ओर संकेत करके) यह हैं मिसेज कैप्टन। (सभी डा. अम्बेडकर को नमस्कार करती हैं।)

हंसा मेहता : (सब बैठते हैं) डाक्टर साहब हम लोग आपसे महात्मा गांधी के प्राणों की भीख माँगने आए हैं। गांधी जी के जीवन की रक्षा आप करें।

डा. अम्बेडकर : कुछ समय आप लोग मुझे और दें। श्री राजगोपालाचार्य, मदनमोहन मालवीय, डा. राजेन्द्र प्रसाद, डा. मुंजे, ठक्कर वापा आदि से इस सम्बन्ध में बातें हुई हैं। इस समय सर सपू और डा. जयकर से इसी विषय पर बात कर रहा हूँ।

सेवक का प्रवेश।

सेवक : श्री देवदास गांधी आना चाहते हैं।

डा. अम्बेडकर : उन्हें आने दो।

देवदास गांधी : (सभी को हाथ जोड़कर) नमस्ते।

सब : नमस्ते।

देवदास गांधी : (आँखों में भरकर) डाक्टर साहब, बापू जीवन-मरण के बीच झूल रहे हैं, आप शीघ्र निर्णय करें।

कस्तूरबा गांधी का डाक्टर साहब के घर जाना।

सेवक का प्रवेश।

सेवक : कस्तूरबा गांधी आना चाहती हैं, उनके साथ तीन महिलाएँ और हैं।

डा. अम्बेडकर : उन्हें आने दो।

समस्त महिलाओं के साथ बाँ, डा. अम्बेडकर के घर में प्रवेश।

बाँ : (बजाय कुर्सी पर बैठने के बाँ धरती पर बैठ गईं) बाबा साहब, बापू के प्राणों के लिए आपके आगे अपना अंचल पसार रही हूँ। (बाँ की आँखों से आँसू निकल रहे हैं) डाक्टर साहब, बापू की जान बचाने की कुंजी आपके पास है, कृपया आप मानवता पर रहम करें और बापू को जीवनदान दें। (हाथ जोड़ती है)।

डा. अम्बेडकर : सपू साहब मेरे सामने विकट स्थिति है, एक तरफ मानवता के नाते गांधी जी के प्राणों की रक्षा, दूसरी तरफ अछूतों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा का प्रश्न। हमारी समस्या का समाधान सामान्य समस्या के समाधान का एक अंग होना चाहिए। उसे भावी शासकों की सद्भावना तथा शुभेच्छा के बदलते हाथों में नहीं छोड़ देना चाहिए। मैं मानवता की लाज

बचाने के लिए डा. सप्रू साहब आपके विचारों से सहमति प्रकट कर रहा हूँ।

कमला नेहरू : डा. अम्बेडकर जिन्दाबाद ! महात्मा गांधी जिन्दाबाद !

सर सप्रू : डा. अम्बेडकर जी, आपको इस सन्धि के लिए बधाई। यह सन्धि पूना पैक्ट के नाम से प्रसिद्ध होगी। कल 24 सितम्बर को आप और कांग्रेस के हस्ताक्षर विधिवत् शर्तों पर होंगे। इसके बाद इसी सूचना ब्रिटिश प्रधान मन्त्री को दी जाएगी।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-5

येवला में सम्मेलन

[सभा का दृश्य डा. अम्बेडकर तथा उनके साथी एम. पिल्ले, एन. शिवराज बैठे हैं।]

एन. शिवराज : डा. साहब और मित्रों ! पूना के पैक्ट के दस वर्ष बीत गए, किन्तु जिस उद्देश्य से वह समझौता किया गया था वह पूरा नहीं हुआ। कांग्रेस के नेताओं ने तो प्रस्ताव पास कर दिया कि जन्म से कोई अछूत नहीं है। सभी स्कूल, धर्मशालाएँ, मन्दिर उनके लिए खोल दिए जाएँ, किन्तु व्यवहार में कुछ दूसरा ही हो रहा है। आप लोगों को जानकारी होगी कि अहमदाबाद के कविया गाँव में अछूतों ने अपने बच्चों को स्कूल भेजा तो वहाँ उनका सामाजिक बहिष्कार किया गया। इसी जिले कजून गाँव में अछूत स्त्रियों ने धातु के बर्तन में जल लाना शुरू किया तो उन नारियों पर लज्जाजनक आक्रमण किया गया, कुछ दिनों पूर्व ही जयपुर के चकवारा गाँव में अछूतों ने अपने जातीय भोज में घी के पकवान बनाए। अछूतों का घी का पकवान खाना हिन्दुओं को बर्दाश्त नहीं हुआ, उन्होंने भोजन के समय सैकड़ों की संख्या में लाठियाँ लेकर निहत्थे अछूतों पर आक्रमण किया। खाने वालों को पीटा गया और उनका भोजन खराब किया गया। यह हमारी दुर्दशा है।

हम जानते हैं कि लॉ कॉलेज का प्रिंसिपल होने पर अंग्रेज

सरकार आपको सर की उपाधि देना चाहती थी, किन्तु आपने राष्ट्रीय हित में उसे ठुकरा दिया। फिर समाज की सेवा के लिए आपने लॉ कॉलेज की प्रिंसीपली भी छोड़ दी। इधर एक दुखद घटना हुई, जिसमें आपकी पत्नी श्रीमती रमाबाई जो आपकी सुख-सुविधा और स्वास्थ्य का ध्यान रखती थी, का देहान्त हो गया, किन्तु फिर भी आप दलितों के संघर्ष में लगे हैं। हम सभी लोग आपके साथ हैं, आपका जो आदेश होगा, उस पर हम मरने-मिटने को तैयार हैं। इधर आपने वाइसराय की सुरक्षा सलाहाकर समिति में भी अछूतों के लिए 8.33 प्रतिशत नौकरियाँ सुरक्षित कराई हैं।

मैं डा. अम्बेडकर साहब से चाहूँगा कि आज के अवसर पर आप सामाजिक और राजनैतिक विषयों पर सम्मेलन में प्रकाश डालें।

डा. अम्बेडकर : श्री एन. शिवराज, पिल्ले साहब और मित्रों तथा देवियों ! आज के सम्मेलन में एक लाख की भीड़ देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है, इसमें ही 29 स्त्रियाँ हैं। आप लोग अपने अधिकारों के लिए जागरूक हैं। आज हमें दो मोरचों पर लड़ना पड़ रहा है—एक सामाजिक और दूसरा राजनीतिक। यदि अछूत हिन्दू धर्म में है ता उसे सामाजिक समता का धर्म बनना पड़ेगा। इसके लिए चार वर्णों के सिद्धान्त को मिटाया जाना सम्भव नहीं है तो अछूत लोग हिन्दू धर्म को त्याग देंगे, किन्तु गांधी की इस वर्ण-व्यवस्था में उन्मूलन के पक्ष में नहीं है इसलिए हमें हिन्दू धर्म छोड़ने पर विचार करना पड़ेगा। दुर्भाग्यवश मैं हिन्दू समाज में माने गए एक अछूत परिवार में पैदा हुआ, यह मेरे बस की बात नहीं थी, किन्तु हिन्दू धर्म में और हिन्दू रहकर मैं न मरूँ, यह मेरे बस की बात है। (तालियाँ बजती हैं)

आपने मेरे साथ जो निष्ठा और आत्मीयता की भावना व्यक्त की है, उसके बदले मैं आपसे यह आश्वासन चाहता हूँ कि आप निष्ठा के साथ संगठित होंगे, संघर्ष करेंगे और जब तक अपने अधिकारों को प्राप्त न कर लेंगे, पीछे न हटेंगे।

तालियाँ बजती हैं। डा. अम्बेडकर जिन्दाबाद !

(परदा गिरता है।)

दृश्य-6

[स्कूल भवन पर तिरंगा झण्डा फहरा रहा है। बुजुर्ग प्रधानाध्यापक एक युवा अध्यापक और कुछ लड़के-लड़कियाँ पंक्ति में खड़े हैं।]

प्रधानाध्यापक : बच्चों आज 15 अगस्त, सन् 1947 ई. को हमारे देश का तिरंगा फहराया जा चुका है। अब झण्डा गीत गया जाएगा।
दो बच्चे आते हैं। झण्डा गान गाते हैं, बच्चे दुहराते हैं।

झण्डा गान

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

सदा भक्ति सरसाने वाला। प्रेम सुधा बरसाने वाला।

वीरों को हरसाने वाला। मातृ-भूमि का तन मन सारा।

प्रधानाध्यापक : आओ प्यारे वीरों आओ। मातृ-भूमि पर बलि-बलि जाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ। प्यारा भारत देश हमारा।

दो बच्चे : भारत माता की...

सब बच्चे : जय !

दोनों : 15 अगस्त...

बच्चे : जिन्दाबाद !

प्रधानाध्यापक : बच्चों हमारा देश कल तक गुलाम था, आज से हम आजाद हैं। अभी तक इस देश पर अंग्रेजों का राज्य था। वे हमें भेड़-बकरियों की तरह हाँकते थे। इस देश के लोगों को अपमानित करते थे। उनका शोषण करते थे। आज खुशी की बात है कि उनका शासन खत्म हो गया है, अब इसी देश के लोग मिल-जुलकर शासन करेंगे। इस अवसर पर आजादी लाने में जो लोग शहीद हुए हैं, हम उन्हें श्रद्धांजलि देकर उनके प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं। आज सारे देश में खुशियाँ मनाई जा रही हैं। इस मौके पर सभी बच्चों को मिष्ठान्न वितरण किया जाएगा और खेल-कूद का कार्यक्रम होगा। अब सब लोग हॉल में चलें।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-7

[एक बुजुर्ग कुर्सी पर बैठे हैं। वह धोती-कुरता पहने हैं। एक अधेड़ व्यक्ति आता है जो खादी का कुरता-पायजामा और टोपी लगाए हैं।]

युवक : प्रोफेसर साहब ! जयहिन्द !

प्रोफेसर : जयहिन्द ! कहो रामसिंह कैसे सवेरे-सवेरे आना हुआ।

रामसिंह : प्रोफेसर साहब ! क्या कहूँ ! देश की आजादी की लड़ाई कांग्रेस और गांधी जी ने लड़ी। अब पूना पैक्ट करके अछूतों को अलग सीटें देने जा रहे हैं। डा. अम्बेडकर ने आजादी की लड़ाई का विरोध किया, अब उन्हीं से समझौता करके अच्छा नहीं किया जा रहा है।

प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद : बेटा रामसिंह ! यह सही है कि महात्मा गांधी और डा. अम्बेडकर में घोर राजनीतिक विरोध था, इसलिए दोनों एक-दूसरे की आलोचना करते रहे, लेकिन जब अंग्रेजों ने मुस्लिमों की तरह हरिजनों को भी पृथक् निर्वाचन की माँग मान ली तो देश के दूसरे विभाजन की नींव पड़ गई थी। गांधी जी ने जब अछूतों के पृथक् निर्वाचन के विरुद्ध आमरण अनशन शुरू कर दिया और गांधी जी के प्राणों पर संकट आ गया तब डा. अम्बेडकर ने पूना पैक्ट कर गांधी जी के प्राणों की रक्षा की। अगर डॉ. अम्बेडकर भी मुहम्मद अली जिन्ना की तरह अपनी माँग पर अड़े रहते तो पाकिस्तान की तरह भारत का एक और टुकड़ा हो सकता था। इस तरह डा. अम्बेडकर ने देश की एकता बनाए रखने में बहुत बड़ी सहायता की है। यह कहना कि डा. अम्बेडकर ने भारत की आजादी का विरोध किया था, सही नहीं। वास्तविकता यह है कि गोलमेज कॉन्फ्रेंस में डा. अम्बेडकर ने यह कहा था कि भारत की आजादी का विरोधी नहीं हूँ, लेकिन देश की आजादी के पहले भारत के दलितों की गुलामी दूर होनी चाहिए। उनका मतलब था कि दलितों के साथ खान-पान, मन्दिर-दर्शन, उठन-बैठन सब में मनुष्यता का व्यवहार नहीं किया जाता। उन्हें पशुओं से भी नीचा समझा जाता है। यदि बिना उन्हें बराबरी का हक दिए देश आजाद हो गया तो दलितों की गुलामी बनी रहेगी, क्योंकि सत्ता चलाने वाले सभी सवर्ण जाति के लोग ही होंगे। इस माने में

उनकी आशंका सही थी। इसलिए उन्हें आजादी का विरोधी नहीं कहा जा सकता। डा. अम्बेडकर की तो सराहना की जानी चाहिए कि उन्होंने पूना पैक्ट करके एक बहुत बड़े संकट से देश को बचा लिया।

रामसिंह : प्रोफेसर साहब ! लेकिन यह बात समझ में नहीं आ रही है कि देश में सवर्णों में एक से एक बड़े विद्वान् मौजूद हैं, उनमें से किसी को संविधान बनाने वाली प्रारूप समिति का चेयरमैन न बनाकर डा. अम्बेडकर को ही इसका चेयरमैन क्यों बनाया गया है। इसे तो सारे सवर्ण समाज का अपमान ही कहा जाएगा।

प्रोफेसर : रामसिंह ! संविधान बनाना बड़ी विद्वता का और टेक्नीकल कार्य है। भले लोग विद्वान् हों, लेकिन यह कार्य बड़ा कठिन है। देश की आजादी के बाद भारत की संविधान सभा का अध्यक्ष तो डा. राजेन्द्र प्रसाद को बना दिया गया, फिर संविधान सभा में संविधान प्रारूप समिति का प्रश्न आया तो कोई बड़ा विद्वान् इस जिम्मेदारी को लेने को तैयार ही नहीं हुआ। पं. जवाहरलाल नेहरू तो विदेशों से संविधान विशेषज्ञ बुलाने पर विचार रकने लगे थे। जब यह बात गांधी जी को मालूम हुई तो उन्होंने पं. जवाहरलाल नेहरू से डा. अम्बेडकर को यह जिम्मेदारी देने को कहा। डा. अम्बेडकर ने संविधान बनाने की चुनौती को स्वीकार कर लिया। डा. अम्बेडकर को जब यह जिम्मेदारी दी गई तो उन्हें भी आश्चर्य हुआ कि जिस कांग्रेस पार्टी का हमने हमेशा विरोध किया, उसने कैसे मेरा विश्वास कर लिया। भारत के लोगों की सहिष्णुता का यह सबसे अच्छा उदाहरण है। अब डा. अम्बेडकर की अध्यक्षता में संविधान प्रारूप समिति बन गई है। इसमें छः सदस्य और रखे गए हैं। नवम्बर 1949 ई. के भीतर इस समिति को संविधान बनाकर प्रस्तुत करने को कहा गया है। डा. अम्बेडकर की विद्वता पर सभी को पूरा विश्वास है। निश्चित ही वह एक अच्छा संविधान बनाकर देश को देंगे।

रामसिंह : प्रोफेसर साहब डा. अम्बेडकर के बारे में बहुत-से लोगों को और मुझे भी बड़ा भ्रम था। आपने मेरा शक दूर कर दिया, इसके लिए आपका आभारी हूँ। अब चलता हूँ।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-8

[संविधान समर्थन समारोह। डा. राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष के आसन पर हैं, उनके एक तरफ पं. जवाहरलाल नेहरू, दूसरी तरफ डा. अम्बेडकर हैं, अगल-बगल मन्त्री तथा सदस्य बैठे हैं।]

पं. जवाहरलाल नेहरू: अध्यक्ष जी तथा संविधान सभा के माननीय सदस्यगण ! मुझे प्रसन्नता है कि भारत का नवीन संविधान बनाने का जो कार्य डा. अम्बेडकर को 29 अगस्त, 1947 ई. को सौंपा गया था उसे अपनी विद्वता और परिश्रम से पूरा करके आज 26 नवम्बर, 1949 ई. को संविधान सभा में बहस करके पास कर दिया है। इसके लिए यह संविधान सभा उनकी आभारी है। अब डा. अम्बेडकर संविधान सभा के अध्यक्ष डा. राजेन्द्र प्रसाद जी को संविधान की एक प्रति पेश करेंगे। (डा. राजेन्द्र प्रसाद, पं. जवाहरलाल नेहरू खड़े होते हैं, साथ ही सभी लोग खड़े हो जाते हैं। डा. अम्बेडकर भारत का संविधान डा. राजेन्द्र प्रसाद को समर्पित करते हैं। तालियाँ बजती हैं। सभी लोग बैठ जाते हैं।)

डा. राजेन्द्र प्रसाद : मैं डा. अम्बेडकर से अनुरोध करूँगा कि इस अवसर पर कुछ कहें।

डा. अम्बेडकर : माननीय संविधान सभा के अध्यक्ष जी, माननीय प्रधान मन्त्री जी तथा सम्मानित सदस्यगण ! भारत के इस संविधान में 8 सूची तथा 395 धाराएँ हैं, इसे भारत की जनता को समर्पित करते हुए मुझे प्रसन्नता है। यह संविधान 26 जनवरी, 1950 ई. से लागू होगा। मैं संविधान परिषद में क्यों आया, केवल अछूत वर्ग के हितों की रक्षा के लिए। इससे अधिक मुझे कोई आकांक्षा नहीं थी, लेकिन यहाँ आने पर मुझ पर इतनी बड़ी जिम्मेदारी लादी जाएगी, इसकी मुझे कल्पना तक नहीं थी। विधान परिषद ने जब मुझे संविधान मसविदा समिति का सदस्य चुना तभी मुझे ताज्जुब हुआ था लेकिन जब समिति ने मुझे अपना अध्यक्ष चुना तब मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। संविधान परिषद और मसविदा समिति ने मुझ पर इतना विश्वास करके मुझसे यह कार्य करवा लिया। समिति के सदस्यों ने मुझे देश-सेवा का अवसर दिया, इसलिए मैं उनके

प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। संविधान कितना ही अच्छा क्यों न हो, यदि उसको व्यवहार में लाने वाले सदस्य अच्छे न हों तो संविधान निश्चय ही बुरा सिद्ध होगा। यदि हम लोग लोकतन्त्र की स्थापना चाहते हैं तो हमें अपने सामाजिक और आर्थिक आदर्शों को अहिंसात्मक वैध उपाय से ही प्रतिष्ठापित करना होगा। स्वतन्त्रता समता, बन्धुता के आधार पर स्थापित जीवन ही लोकतन्त्र कहलाता है। भारत में समता का पूर्ण अभाव है। राजनीति में हमें समानता मिली है, परन्तु सामाजिक और आर्थिक जीवन में विषमता ही व्याप्त है। राष्ट्र कहलाने में बाधक हजारों जातियों, उपजातियों की बाधा को दूर करके हमें एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाना है। (तालियाँ बजती हैं। डा. अम्बेडकर बैठ जाते हैं।)

डा. राजेन्द्र प्रसाद : श्री टी. टी. कृष्णामाचारी अपने विचार व्यक्त करेंगे।

श्री टी. टी. : माननीय अध्यक्ष जी एवं सदस्यगण ! सदन सम्भवतः इस बात से परिचित है कि आपके द्वारा मनोनीत सात सदस्यों में से एक ने सभा से ही त्याग-पत्र दे दिया और उनके स्थान पर दूसरा व्यक्ति रखा गया। एक की मृत्यु हो गई, लेकिन उनका रिक्त स्थान भरा नहीं गया। एक कहीं दूर अमेरिका में थे और उनके स्थान को भी नहीं भरा गया। एक और सदस्य राज्य के मामलों में उलझे हुए थे। अतः उस सीमा तक समिति में रिक्तता थी। एक या दो सदस्य देहली से कहीं दूर थे और सम्भवतः उनके स्वास्थ्य ने उन्हें समिति में भाग लेने की अनुमति नहीं दी। अतएव अन्त में संविधान प्रारूप तैयार करने का सारा भार डा. अम्बेडकर के ऊपर ही आ गिरा। निश्चित रूप से हम सब उनके प्रति बड़े आभारी हैं कि डाक्टर साहब ने इस कार्य को जिस ढंग से सम्पन्न किया है, वह निःसंदेह प्रशंसनीय है। (बैठ जाते हैं।)

डा. राजेन्द्र प्रसाद : (खड़े होकर) सम्मानित सदस्यों ! अध्यक्ष पद पर बैठते हुए तथा रोजाना की कार्यवाही को देखते हुए मैंने यह महसूस किया कि प्रारूप समिति के सदस्यों, विशेष रूप से अध्यक्ष डा. अम्बेडकर ने अपने बिगड़े स्वास्थ्य के बावजूद भी किस उत्साह तथा निष्ठा के साथ काम किया, उसे कोई और नहीं कर सकता था। जब हमने उन्हें प्रारूप समिति में रखा और

उसका अध्यक्ष बनाया तब इस निर्णय से अच्छा कोई निर्णय नहीं ले सकता था। उन्होंने अपने चुनाव को न्यायोचित ही नहीं ठहराया है, बल्कि उस काम में चार चाँद भी लगा दिए। जो उन्होंने सम्पन्न किया है।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-9

[डा. अम्बेडकर, डा. मावलंकर क्लीनिक में चारपाई पर बैठे हैं। चादर ओढ़े हैं। सामने डा. मावलंकर क्लीनिक का बोर्ड लगा है। डा. मावलंकर एक अधेड़ व्यक्ति हैं, वह भी वहीं कुर्सी पर बैठे हैं। डा. सविता कबीर आती हैं।]

डा. सविता कबीर : (डा. अम्बेडकर के पास खड़ी होकर) कहिए डाक्टर साहब, अब आपकी तबीयत कैसी है ?

डा. अम्बेडकर : डॉ. सविता जी। अब तो मुझे बहुत आराम है। आपने मेरी सेवा की है, उससे मुझे बड़ी राहत मिली है। मैं आपका कृतज्ञ रहूँगा।

डा. मावलंकर : डा. अम्बेडकर जी। आपके स्वास्थ्य में तो बहुत सुधार हो गया, लेकिन आपको लगातार इलाज की जरूरत है, अगर इसमें कमी हुई तो आपका स्वास्थ्य फिर खराब हो सकता है।

डा. अम्बेडकर : डा. मावलंकर जी आप मुझे इलाज बताइए। मैं उसे करने की पूरी कोशिश करूँगा।

डा. सविता जाती है।

डा. मावलंकर : डा. अम्बेडकर जी। आपको मधुमेह का रोग है। इसके इलाज के लिए प्रतिदिन इंसुलिन का टीका लगना चाहिए और इसके अलावा आपको पत्नी का साथ भी चाहिए।

डा. अम्बेडकर : डा. मावलंकर। मैं इंसुलिन के प्रतिदिन टीके का तो प्रबंध कर सकता हूँ, किन्तु स्त्री के साथ वाली बात समझ में नहीं आती। तेरह वर्ष बीत गए रमाबाई को मुझसे बिछुड़े हुए। अब इस आयु में आप क्या कह रहे हैं।

डा. मावलंकर : डा. अम्बेडकर। आपका जीवन बड़ा ही मूल्यवान है। देश और समाज को आपकी बड़ी आवश्यकता है। अपने लिए न सही तो देश और समाज के लिए तो आपको और जीवित रहना है।

- मेरी सलाह है कि आप एक डाक्टर स्त्री से विवाह कर लें। इससे आपकी समस्या हल हो जाएगी।
- डा. अम्बेडकर : डा. मावलंकर। आप कह रहे हैं तो मैं इस पर विचार करूँगा। लेकिन डाक्टर के साथ ही मेरे विचारों पर चलने वाली साथी कहाँ से मिलेगी ?
- डा. मावलंकर : डा. अम्बेडकर यदि आप अपनी स्वीकृति दे दें तो यह जिम्मेदारी मेरी होगी, मैं आपके उपयुक्त साथी की तलाश कर सकता हूँ।
- डा. अम्बेडकर : आप चाहते हैं तो जो उचित समझें करें।
- डा. मावलंकर : डा. अम्बेडकर आप डा. सविता कबीर को तो जानते हैं।
- डा. अम्बेडकर : क्यों नहीं। उन्होंने तो मेरी बड़ी सेवा की है, अपने हाथ बनाया अच्छा भोजन भी एक दिन कराया था।
- डा. मावलंकर : यदि डा. सविता को आपका साथी बना दिया जाय तो कैसा रहेगा ?
- डा. अम्बेडकर : (कुछ सोचते हुए) डा. सविता तो महाराष्ट्रियन ब्राह्मण है। वह भला मेरे विचारों के अनुकूल कैसे चल सकती हैं। मेरा संघर्ष वर्ण-व्यवस्था के विरुद्ध है, इसका समर्थन वे कैसे करेंगी।
- डा. मावलंकर : डा. अम्बेडकर। आप अभी डा. सविता को पूरी तरह नहीं जान पाए। मैं उसे बुलवाता हूँ, आपके सामने बातें हो जाएँगी।
- डा. मावलंकर घंटी बजाते हैं, चपरासी आता है।
- डा. मावलंकर : डा. सविता को बुलाओ।
- डा. सविता आती है। 28 वर्ष की, गोरा रंग, अच्छे नाक-नक्श की है। मावलंकर उसे कुर्सी पर बैठने का संकेत करते हैं। वह कुर्सी पर बैठ जाती है।
- डा. मावलंकर : डा. सविता। आप जानती हैं डा. अम्बेडकर कितने विद्वान् महापुरुष हैं। देश का संविधान बनाकर भारत की आजादी का इतिहास शुरू करने जा रहे हैं। समाज की समता के लिए आगे इन्हें संघर्ष करना है, उनके कार्य में तुम्हें सहभागी बनना पड़ेगा।
- डा. सविता : डा. मावलंकर जी। यह तो मेरा महान सौभाग्य होगा कि मैं भारत के महान विधिवेत्ता डा. अम्बेडकर की सहचरी होकर उनकी सेवा करूँ।
- डा. अम्बेडकर : डा. सविता। यह याद रखो, तुम एक ब्राह्मण लड़की हो और

में एक अस्पृश्य महार। तुम्हारी जाति और परिवार के लोग तुम्हारा परित्याग कर देंगे।

डा. सविता : डाक्टर साहब, जहाँ तक मेरे परिवार का सम्बन्ध है, वह जाति-पाँति में विश्वास नहीं रखते। मेरे भाई भी इसी विचार के हैं। हाँ, जहाँ तक महाराष्ट्रियन ब्राह्मणों का सवाल है, वे जरूर विरोध करेंगे, लेकिन उनके विरोध की मुझे परवाह नहीं।

डा. अम्बेडकर : मैं ब्राह्मणी व्यवस्था में विश्वास नहीं करता। कोई ऐसा अवसर आया तो सिविल मैरिज ऐक्ट से कोर्ट में विवाह करूँगा।

डा. सविता : डाक्टर साहब ! मुझे सब स्वीकार है। आपके विचार ही मेरे विचार होंगे।

डा. मावलंकर : मैं समझता हूँ डा. अम्बेडकर और डा. सविता दोनों को जीवन साथी बनना स्वीकार है। शुभस्य शीघ्रम् ! मैं डा. अम्बेडकर से अनुरोध करता हूँ कि वे आगामी 14 अप्रैल, 1948 ई. को जिस दिन उनका जन्मदिन है, उसी दिन दोनों अपने नये जीवन की शुरुआत करें। आप दोनों को मेरी शुभ कामनाएँ।

डा. सविता अम्बेडकर चरण छूती है और उनके वगल में खड़ी हो जाती है।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-10

[पं. जवाहरलाल नेहरू बैठे हैं। सामने मेज है, दूसरी कुर्सी खाली है। चपरासी आता है। पंडित जी को नमस्कार करता है और कहता है—पंडित जी डा. अम्बेडकर साहब आ गए हैं।]

पं. जवाहरलाल : आइए डा. अम्बेडकर साहब ! दोनों खड़े होकर हाथ मिलाते हैं।

डा. अम्बेडकर : कहिए पंडित जी, कैसे आपने याद किया ?

पं. जवाहरलाल : डाक्टर साहब, मैंने आपसे कुछ आवश्यक परामर्श के लिए कष्ट दिया है।

डा. अम्बेडकर : कहिए।

पं. जवाहरलाल : आप जानते हैं हिन्दू कोडबिल जो आपने 24 फरवरी, 1949 को लोकसभा में पेश किया है, उसे लेकर देश भर में बहुत

बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ है। विरोधी पक्ष के लोग जनता को बहका रहे हैं। हमारी पार्टी के लोग भी इसका विरोध कर रहे हैं। डा. राजेन्द्र प्रसाद और सरदार पटेल जैसे लोग भी इसका विरोध कर रहे हैं।

- डा. अम्बेडकर :** पंडित जी, आप तो हिन्दू कोडबिल की समस्त धाराओं से सहमत हैं। यदि आप हिन्दू प्रणाली, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू समाज की रक्षा करना चाहते हैं तो जो खराबियाँ पैदा हो गई हैं उन्हें सुधारने से मत हिचकिए। यह बिल उन्हीं अंगों का सुधार चाहता है जो बिगड़ गए हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। इस बिल में उत्तराधिकार, गुजारा, विवाह, तलाक, गोद लेना, नाबालिगपन और अभिभावकता के सम्बन्ध में किसी बात से तो आपके मतभेद नहीं हैं।
- पं. जवाहरलाल :** हाँ डाक्टर साहब, मैं इस बिल के उद्देश्य से पूर्ण सहमत हूँ। हिन्दू समाज के सुधार में इस बिल का बहुत बड़ा योगदान हो सकता है, इससे सहमत होते हुए भी पार्टी के भीतर और बाहर इसका विरोध देखकर मैं चाहता हूँ इसे कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दिया जाय, क्योंकि विरोध के कारण अगर यह बिल पास नहीं होता है तो मुझे प्रधान मन्त्री पद से त्याग-पत्र देना पड़ सकता है।
- डा. अम्बेडकर :** पंडित जी, मैं इस बिल के स्थागित करने के पक्ष में नहीं हूँ। इस समय आप हिन्दू कोडबिल को इस नाम से लोकसभा में भले न पास करा सकें, लेकिन स्त्रियों की इस बिल के प्रति बढ़ती हुई माँग और समय की माँग को देखते हुए किसी अन्य नाम से इसकी धाराओं को पास कराना ही पड़ेगा। चूँकि इस सम्बन्ध में मेरे और आपके विचार अलग हैं, इसलिए मैं आपके मन्त्रिमण्डल से त्याग-पत्र देना उचित समझता हूँ।
(परदा गिरता है।)

तृतीय अंक

दृश्य-1

बम्बई प्रान्तीय असृश्य परिषद मालवण महाराष्ट्र का सम्मेलन

[एन. शिवराज और डा. अम्बेडकर मंच पर बैठे हैं। डा. अम्बेडकर के गले में मालाएँ पड़ी हैं।]

डा. एन. शिवराज : दलितों के मसीहा डा. अम्बेडकर जी और भाइयों ! आज यह सम्मेलन डा. अम्बेडकर की अनुमति से बुलाया गया है। डा. अम्बेडकर का हम लोग हृदय से स्वागत करते हैं। (तालियाँ बजती हैं) हम दलित महार लोग अपने को हिन्दू कहते हैं, लेकिन हिन्दू ही हमारा अपमान भी कर रहे हैं। क्या हम और हमारी सन्तानें अपमान में ही जीते रहेंगे या हमारे उद्धार की भी कोई आशा है। डा. अम्बेडकर साहब से हम इसी विषय पर जानना चाहते हैं।

डा. अम्बेडकर : एन. शिवराज जी और भाइयों ! आज एन. शिवराज ने एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया, हिन्दू धर्म मानकर भी दलित समाज पशुओं से भी गया-गुजरा जीवन बिता रहा है। अभी कुछ ही दिनों की बात है कि पेशवा के शासन में पूना में दलितों को उस सड़क पर चलने की इजाजत नहीं थी जिस पर सवर्ण चलते थे। जिससे हमारी छाया से वे अपमानित न हो जाएँ। प्रत्येक दलितों को अपनी कलाई या गले में निशानी के तौर पर एक काला डोरा बाँधना जरूरी था ताकि सवर्ण हिन्दू उसे पहचान लें और भूल से उसका दर्शन न कर लें। दलितों के लिए राजाज्ञा थी कि वे कमर में झाड़ू बाँधकर चलें ताकि उनके चलने से जमीन पर बने उनके पैरों के निशान मिटते चले जाएँ अन्यथा उन निशानों पर सवर्ण हिन्दुओं के पैर रखने से वे भ्रष्ट न हो जाएँ। इतना ही नहीं, पूना में अछूतों को

अपने गले में हाँडी बाँधकर चलनी पड़ती थी जिससे वे अगर थूकें तो उसी हाँडी में थूकें ताकि जमीन पर उनका थूक गिरने से न केवल जमीन बल्कि सवर्ण हिन्दू को भी उस पर पैर रखने से अपमानित हो जाने का डर था।

चोबदार तालाब में दलितों के पानी पीने का प्रश्न हो या नासिक के मन्दिर में कालाराम का दर्शन हो या पूना की घटना सभी में दलितों को अपमानित किया जाता रहा है, लेकिन 8 अक्टूबर, 1935 ई. को कविथा गाँव की घटना ने मुझे विचलित कर दिया है। बम्बई प्रेसीडेंसी के अतकदा के छोलकातालुका के कविथा गाँव में बम्बई सरकार ने सार्वजनिक स्कूलों में अछूतों के बच्चों के प्रवेश के लिए आदेश जारी किया तो 8 अगस्त, 1935 ई. को कविथा गाँव में अछूतों ने अपने चार बच्चों को स्कूल में दाखिला करा दिया। इस पर गाँव के सवर्ण हिन्दुओं ने अपने बच्चों को स्कूलों से निकाल लिया, क्योंकि वे अछूत बच्चों के साथ अपने बच्चों को उपस्थित नहीं करना चाहते थे। कुछ दिनों के बाद गाँव के सवर्ण हिन्दुओं ने तलवारों, बरछों से अछूतों के घरों पर हमला बोल दिया। बच्चों, वृद्धों और महिलाओं को काट-काटकर घायल कर दिया। घरों के दरवाजे तोड़ दिए, छतों की ईंटें उखाड़ दीं। लोगों ने अछूतों का बहिष्कार कर दिया, जिससे उनका जीवन असहनीय हो गया। कुएँ में मिट्टी का तेल डाल दिया। पशुओं का खेतों में चराना बन्द करा दिया। कई दिनों के बाद मजिस्ट्रेट के हस्तक्षेप से यह मामला शान्त हुआ। इस घटना से मुझे बहुत कष्ट पहुँचा है। इसका यह मतलब है कि हिन्दू समाज में रहकर अछूत कभी पढ़-लिख नहीं सकता है इसलिए यह सदैव गुलाम ही बना रहेगा और उसका उत्थान कभी हो ही नहीं सकता। हमने हिन्दू समाज में समानता का दर्जा हासिल करने के लिए हर तरह की कोशिशें कीं और सत्याग्रह किया, परन्तु सब बेकार। हिन्दू समाज में समानता के लिए कोई स्थान नहीं है, इसलिए आज मैं घोषणा करता हूँ कि दलितों को धर्म-परिवर्तन कर हिन्दू धर्म त्यागने का प्रस्ताव कर देना चाहिए।

तालियाँ बजती हैं।

एक युवक : डा. अम्बेडकर !

लोग : जिन्दाबाद !

डा. अम्बेडकर : तुम संघर्ष करो !

लोग : हम तुम्हारे साथ हैं !

एन. शिवराज : डाक्टर साहब आज की इस सभा में ही लोग धर्म-परिवर्तन का प्रस्ताव पास करने जा रहे हैं।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-2

[बम्बई महार परिषद की बैठक। 31 मई, 1936 ई. बैनर लगा है। एन. शिवराज, पी. एल. राजभोज, डा. अम्बेडकर तथा अन्य नेता मंच पर बैठे हैं।]

एन. शिवराज : उपस्थित सज्जनों ! आज महार परिषद की बैठक उसके अध्यक्ष डा. अम्बेडकर ने बुलाई है। अब वह हमारे बीच आ गए हैं। अब मैं डा. अम्बेडकर जी से अनुरोध करता हूँ कि वे सभापति का आसन ग्रहण करें।

डा. अम्बेडकर आगे आकर बैठते हैं, उनको माला पहनाई जाती है। तालियाँ बजती हैं।

एन. शिवराज : माननीय डाक्टर साहब और उपस्थित साथियों ! डा. अम्बेडकर अछूत जाति के मसीहा बन गए हैं, उनकी योग्यता पर हमें गर्व है। उन्होंने आज परिषद की बैठक बुलवाई है, हम लोग उनके साथ हैं। वह हमें सम्बोधित करेंगे। इस बैठक को बुलाने का प्रयोजन क्या है और हमें क्या करना है ?

डा. अम्बेडकर माइक पर आते हैं। तालियाँ बजती हैं।

डा. अम्बेडकर : मित्रों तथा भाइयों ! मैंने धर्मान्तरण की जो घोषणा की है, मुख्यतः उसी पर चिन्तन और सलाह करने के लिए मैंने यह परिषद बुलाई है। धर्मान्तरण कोई बच्चों का खेल नहीं है, न तो यह मौज का विषय है, यह तो तमाम दलित समाज की जिन्दगी और मौत का सवाल है। नाविक को अपना जहाज नये बन्दरगाह पर ले जाने के लिए जितनी मात्रा में पूर्व तैयारी करनी पड़ती है, उतनी ही पूर्ण तैयारी धर्मान्तरण के लिए भी करनी पड़ती है। धर्मान्तरण के प्रश्न पर दो दृष्टियों से विचार

करना चाहिए—सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से। हिन्दू धर्म की रचना वर्ग कल्पना के आधार पर की गई है। एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के साथ किस तरह का व्यवहार करना चाहिए, इसकी शिक्षा हिन्दू धर्म में नहीं है। हिन्दू धर्म वर्ण-व्यवस्था पर आधारित है। इसका मतलब है इस धर्म में जाति-पाँति, छोटे-बड़े की भावना विद्यमान है। हिन्दू धर्म में रहकर आप चाहे कितने ही विद्वान् या सम्पन्न क्यों न हो जाओ, धर्म की दृष्टि से शूद्र ही माने जाएँगे। हिन्दू धर्म में यदि छुआछूत खतम भी हो जाय तब भी समता नहीं आ सकती। क्योंकि रोटी और बेटी का व्यवहार इस धर्म में स्वीकार नहीं हो सकता।

जब तक आप लोग हिन्दू धर्म में रहेंगे, तब तक हिन्दुओं से छुआछूत के कारण पानी के लिए, रोटी के लिए, बेटी के लिए झगड़ना ही पड़ेगा। दोनों एक-दूसरे के दुश्मन बने रहेंगे। यदि इस झगड़े को खतम करना है, तो हमें धर्मान्तरण करना चाहिए। धर्मान्तरण का रास्ता पलायनवाद का रास्ता नहीं है। यह एक समझदारी का रास्ता है, मनुष्यता का रास्ता है। पहले आर्थिक उन्नति या धर्मान्तरण इस प्रश्न पर भी विचार करना चाहिए। कुछ लोग आर्थिक उन्नति को प्राथमिकता देते हैं। मेरा विचार इसके विपरीत है। आर्थिक उन्नति के लिए भी पहले धर्मान्तरण आवश्यक है। यदि आप धर्मान्तरण के पूर्व आर्थिक उन्नति करना चाहते हैं तो कई बाधाएँ सामने आएँगी। नौकरी, व्यापार, होटल, दुकान, हर जगह अवरोध आएगा। मैं आप लोगों को स्पष्ट रूप से कह देना चाहूँगा कि मनुष्य धर्म के लिए नहीं, बल्कि धर्म मनुष्य के लिए है, संसार में मनुष्य से बढ़कर कोई चीज नहीं है। धर्म एक साधन मात्र है, जिसे बदल दिया जा सकता है, फेंक दिया जा सकता है।

यदि आपको इन्सानियत से मुहब्बत है तो धर्मान्तरण करें। हिन्दू धर्म का त्याग करें। सदियों से गुलाम वर्ग की मुक्ति के लिए एकता संगठन करना हो तो धर्मान्तरण करें। (आवाज, हम लोग तैयार हैं) आप धर्मान्तरण के लिए तैयार है, मुझे खुशी है। धर्मान्तरण के बाद हम कौन-सा धर्म ग्रहण करें, इस पर आप लोग विचार करें।

- एन. शिवराज : भाइयों ! अपने डाक्टर साहब का विद्वतापूर्ण भाषण सुना।
जो लोग धर्मान्तरण के लिए तैयार हों, वे हाथ उठाएँ।
बहुत हाथ उठते हैं।
- एन शिवराज : आप सबको धन्यवाद।
(परदा गिरता है।)

दृश्य-3

['धर्मान्तरण सम्बन्धी गोष्ठी' बैनर लगा है। गोष्ठी का दृश्य। डा. अम्बेडकर तथा अन्य कई नेता मंच पर बैठे हैं।]

डा. अम्बेडकर : भाइयों ! हमने हिन्दू धर्म छोड़ने का तो निर्णय ले लिया। अब हमें इसके बदले कौन-सा धर्म ग्रहण करना चाहिए, इस पर आज विचार करना है। आप लोग स्वतन्त्रता पूर्वक अपने विचार प्रकट करें। अन्तिम निर्णय विचार के बाद किया जाएगा।

एक व्यक्ति : मेरे विचार से हम लोगों को सिख धर्म अपना लेना चाहिए। इस धर्म में छुआछूत नहीं है। लोग स्वावलम्बी और बहादुर होते हैं। खान-पान, गुरुद्वारों में कहीं भी भेद नहीं होता।

डा. अम्बेडकर : सिख धर्म में बहुत-सी खूबियाँ हैं, किन्तु वह हिन्दू धर्म के प्रभाव से अछूता नहीं है। जैसे बाल्मीकि भाई सिक्ख धर्म में हैं, उन्हें मजहबी सिख कहकर उनके साथ भेदभाव किया जाता है और दूसरे अछूतों के सिख धर्म अपनाने पर रामदासिया कहा जाता है।

दूसरा व्यक्ति : हमें तो क्रिश्चियन धर्म अच्छा लगता है। जाति-पाँति का न भेदभाव, न कोई बन्धन। सारे संसार में इस धर्म के मानने वाले हैं। इस धर्म के लोगों ने अनुसूचित जातियों या अनुसूचित जन-जातियों की, जिनसे लोग घृणा करते हैं सच्ची सेवा की है। उन्हें शिक्षा देकर इंसान बनाया है, इस धर्म में काले-गोरे सभी बहुत बड़ी संख्या में हैं। ईसाई बनकर हमें नौकरियाँ भी खूब मिलेंगी।

डा. अम्बेडकर : आपकी बातें कुछ अंश तक ठीक हैं, किन्तु यह धर्म हमारे देश की संस्कृति से मेल नहीं खाता। हमारे वर्ग की जनता इस धर्म को कभी स्वीकार नहीं करेगी।

- एक व्यक्ति : बाबा साहब हमको भाईचारे और बराबर पाखण्ड भी नहीं है। भेदभाव का बदला
- डा. अम्बेडकर : आपको यह जानका आया है कि वह इस् हैं। उन्होंने यह भी ग्रहण करेंगे उन्हें जाएगी। यद्यपि इस्लाम में कई खूबियाँ हैं, किन्तु इस्लाम भी हिन्दू धर्म की बुराइयों से बच नहीं सकता है। विदेशी धर्म होने के कारण हमारे देश के गरीब लोग इसे बड़ी संख्या में नहीं अपना सकेंगे। जहाँ तक निजाम साहब के इस्लाम धर्म ग्रहण करने पर आर्थिक सहायता देने की बात हम इस लालच में नहीं पड़ेंगे।
- एक नौजवान : बाबा साहब, हम लोगों को भारतीय संस्कृति से मेल खाते हुए बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लेना चाहिए। इसमें जाति-पाँति, छुआछूत का जहाँ निषेध है, वहीं बुद्धि और विवेक पर आधारित यह धर्म है। अन्धविश्वासों और बुराइयों से दूर यह मानवता का धर्म है।
- डा. अम्बेडकर : हाँ, बौद्ध धर्म भारत का प्राचीन धर्म है। यद्यपि भारत में वैदिक धर्म ने इसे बहुत क्षति पहुँचाई है, किन्तु विदेशों में अब भी इसके मानने वालों की काफी संख्या है। इस धर्म को स्वीकार किया जा सकता है।
- कई लोग : डाक्टर साहब ! हम लोगों को रास्ता मिल गया। हम लोगों को हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म ही ग्रहण करना चाहिए।
- डा. अम्बेडकर : यदि आप सब लोगों की राय है तो हमारा बौद्ध धर्म ग्रहण करना ही ठीक होगा। उपयुक्त विधि तथा स्थान की जानकारी आपको दी जाएगी। उस अवसर पर लाखों की संख्या में सभी को बौद्ध धर्म ग्रहण करना चाहिए। इस बीच आप बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों की जानकारी करें और सब लोगों को इसके लिए तैयार करें। आपकी क्या राय है ?
- आवाजें : हम सब तैयार हैं।
- डा. अम्बेडकर : आज अपने एक निर्णय ले लिया कि गोष्ठी समाप्त करने से

पूर्व दो नौजवान आपके सामने एक गान प्रस्तुत करेंगे।
दोनों नौजवान आते हैं।

गीत

हिन्दू अपमान करते हमारा।
इनके धर्म न होवे गुजारा ॥
चारवर्णी व्यवस्था बनाया,
सबसे नीचे हमें ला बिठाया।
मारे इंसानियत पर कुठारा ॥
जानवर से दलित नीच जानें।
करते अपमान लज्जा, न मानें ॥
करते अधरम, धरम का दे नारा।
छूत ऐसी दलित जन लगाए
जाएँ मंदिर तो उन्हें भगाए
ऐसे मंदिर से कर लो किनारा ॥
चोबदार, सवर्ण नहाये
दलित प्यासा वहाँ जा न पाए
बोले हिन्दू न देखे नजारा ॥
अपने सम्मान हित धर्म बदले,
जहाँ समता नहीं उससे कट लें
बौद्ध धर्म दे 'मित्र' सहारा ॥
(परदा गिरता है।)

दृश्य-4

[मनमोहन जोगेलकर और रामदास अठावले दोनों जवान और एक व्यक्ति ढोलक लिए दिखाई पड़ता है।]

ढोलकवाला : (ढोलक पर थाप देते हुए) सुनो भाईयों, सुनो, आपको जरूरी सूचना !

बहुत-से लोग, स्त्री, बच्चे इकट्ठे हो जाते हैं।

जोगेलकर : भाईयों ! 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर सभी को चलना है।
आप लोग लाखों की तादाद में नागपुर में 14 एकड़ में बने दीक्षा

स्थल पर सवेरे पहुँचे। उस दिन दलितों के मसीहा बाबा साहब डा. अम्बेडकर अपने अनुयाइयों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण कर रहे हैं। आप भी वहाँ हिन्दू धर्म की जातिवादी विषम व्यवस्था के विरोध में हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म ग्रहण करेंगे। आप लोग अपने सरों के बाल कटा लें और सफेद वस्त्र धारण कर आँ। अपने साथ खाने-पीने की व्यवस्था करके आँ। क्योंकि लाखों की भीड़ में उक्त व्यवस्था करना ठीक नहीं होगा।

एक युवक : (भीड़ से खड़ा हो जाता है) सुना बाबा साहब बड़े विद्वान् हैं। बहुत-सी किताबें उन्होंने लिखी हैं। उनके नाम बताएँ, क्या यह किताबें वहाँ मिल सकेंगी।

अठावले : बन्धु आपका कहना ठीक है। बाबा साहब ने बहुत-सी किताबें लिखी हैं, जिनमें भारत में जाति, भारत में छोटी जोतें और उनका हल, रुपये की समस्या, जातिभेद का उच्छेद, संघ बनाम स्वतन्त्रता, रानाडे, गांधी और जिन्ना, साम्प्रदायिक समस्या और उसका समाधान, कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया ? पाकिस्तान अथवा भारत का विभाजन, राज्य और अल्पसंख्यक, हिन्दू नारी का उत्थान और पतन, मुख्य हैं। इसके अलावा कई पत्र निकाले और उनकी स्पीचों के संग्रह हैं। नागपुर मेले में आपको अधिकांश पुस्तकें मिल जाएँगी।

युवक : बाबा साहब ने 14 अक्टूबर को विजय दशमी के दिन ही बौद्ध धर्म में जाने को क्यों चुना है ?

अठावले : धर्मान्तरण की तिथि 14 अक्टूबर इसलिए उन्होंने चुनी है कि इसी दिन सम्राट अशोक ने कलिंग विजय के नरसंहार को देखकर कहा था 'यह विजय भी मेरी पराजय है।' अब मैं भविष्य में कभी भी मनुष्यों को शस्त्र बल से नहीं, बल्कि करुणा और मैत्री के बल से जितूँगा। इस घटना को धर्म विजय दशमी के नाम से मनाया गया था। इसलिए बाबा साहब ने इसी दिन को धर्मान्तरण के लिए चुना है। एक बात और है कि यह वर्ष भगवान बुद्ध का पच्चीससौवाँ (2500) शताब्दी वर्ष भी है। (उस युवक को नोटिसों का पुलिन्दा देता है) आप लोगों को लेकर 14 अक्टूबर को नागपुर अवश्य आवें।

भीड़ : हम लोग जरूर पहुँचेंगे।

(परदा गिरता है।)

दृश्य-5

[14 अक्टूबर, 1956। नागपुर बौद्ध दीक्षा भूमि-स्थल। प्रातः 8.30 पर एक बैनर लगता है। मुख्य द्वार साँची के विशाल तोरणद्वार के नमूने का बना है। चारों तरफ हजारों पंचशील के झण्डे फहरा रहे हैं। एक तरफ मंच बना है। मंच पर एक प्रमुख स्थान है, दो सिंह मूर्तियों के मध्य भगवान बुद्ध की मूर्ति की स्थापना की गई है। मंच पर महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया कलकत्ता के जनरल सेक्रेटरी श्री देवप्रिय बालिसिन्हा, भिक्खू एम. संघे रतन (सारनाथ), भिक्खू मंच सद्व्रतिएस थेरो और भिक्खू प्रज्ञानन्द (लखनऊ) मंच पर विराजमान हैं। मंच बौद्ध रीति से सजाया गया है। पाँच कलायुक्त घड़ों में जल भरा है। मंच पर पंचशील की पताकाएँ फहरा रही हैं। मैदान में लोग लाखों की संख्या में पंक्तिबद्ध बैठे हुए हैं। लोगों के सर घुटे हैं और सभी सफेद वस्त्र धारण किए हुए हैं। बाबा साहब डा. अम्बेडकर, सविता अम्बेडकर, सेवक रत्न सफेद वस्त्र में दिखाई पड़ते हैं।]

युवक : भगवान बुद्ध की...

सब लोग : जय !

युवक : बाबा साहब की...

सब लोग : जय !

डब्ल्यू. एम. गाडबोले: सज्जनों ! नागपुर की दीक्षा भूमि पर बाबा साहब अम्बेडकर और श्रीमती सविता अम्बेडकर पधार रहे हैं। हम इस पवित्र भूमि पर उनका स्वागत करते हैं। आपको मालूम हो कि 83 वर्षीय भदन्त चन्द्रमणि जी कुशीनगर मौजूद हैं। आज वही बाबा साहब को बौद्ध धर्म की दीक्षा देंगे। महाबोधि सोसाइटी ऑफ दी इण्डिया कलकत्ता के जनरल सेक्रेटरी देवप्रिय बालि सिन्हा, भिक्खू एम. संघ रतन सरितानन्द, भिक्खू एम. संघरतन सारनाथ, भिक्खू एच. श्रद्धातिएस थेरो, भिक्खू प्रज्ञानन्द (लखनऊ) आदि मंच पर पधार चुके हैं। मैं डब्ल्यू. एम. गाडबोले आयोजन समिति के सचिव की हैसियत से, यहाँ पर पधारे सभी लोगों का स्वागत करता हूँ।

श्री गाडबोले मंच से नीचे जाते हैं और बाबा साहब तथा सविता अम्बेडकर को नमस्कार कर मंच के ऊपर ले आते हैं।

एक युवक : भगवान बुद्ध की...

सब लोग : जय !

युवक : बाबा साहब अम्बेडकर की...

सब : जय !

डब्ल्यू. एम. गाडबोले: सज्जनों ! आज तीन लाख उपासकगण इस दीक्षा भूमि पर एकत्र हैं। जो बौद्ध धर्म से दीक्षा लेंगे। लेकिन सबसे पहले मदन्त चन्द्रमणि जी बाबा साहब अम्बेडकर और श्रीमती सविता अम्बेडकर को दीक्षा देंगे। उसके बाद बाबा साहब सभी उपासकगणों को दीक्षा देंगे। दीक्षा देने के पूर्व दो युवक एक गीत प्रस्तुत करेंगे।

दो बच्चे-बच्चियाँ आते हैं और गीत गाते हैं।

गीत

बाबा तुम मुक्ति दाता हो आये,
लड़ के कंटक हमारे हटाये।
हम सरोवर से जल पी न पाते,
उनके पशु उसमें जाकर नहाते ॥
लड़कर पानी हमें तुम पिलाये,
हिन्दू, हिन्दू में भेद बताये,
दलित मंदिर में दर्शन न पाये,
जालुपाखण्ड से तुम छुड़ाये।
विद्या पढ़ न सके शूद्र माने,
नीच पशु से सदा हमको जाने।
अप्प दीपों भव दीपक दिखाये।
दलित हित सबसे ऊपर है माना,
बुरा माने यह रारा जमाना।
जीवन गांधी दे तुमने बचाये।
भारतीय संविधान विधाता,
लोकतन्त्र और समता के दाता।
बन्धुता भाव उसमें समाये।
चतुरवर्णव्यवस्था में बन्दी।
जीवन तड़पे देख चाल गन्दी,
बौद्ध धर्म का पथ तुम दिखाये ॥

गाडबोले : अब मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूँ कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर जैसे महारत्न को पैदा करने वाले उनके स्वर्गीय माता-पिता की पुण्य स्मृति में एक मिनट के लिए खड़े हो जाएँ

और उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करें।

सभी लोग खड़े हो जाते हैं। वातावरण बिल्कुल शान्त है।

गाडबोले : अब आप लोग अपना स्थान ग्रहण करें।

सब अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते हैं।

गाडबोले : अब भदन्त चन्द्रमणि जी त्रिशरण और पंचशील बाबा साहब को देने जा रहे हैं।

सभी लोग विनायवनत हाथ जोड़कर धर्म ग्रहण करने के लिए शान्ति से बैठ जाते हैं। बाबा साहब डा. अम्बेडकर और सविता अम्बेडकर खड़े होते हैं। उनके सामने भदन्त चन्द्रमणि जी खड़े हैं। भदन्त चन्द्रमणि जी और बाबा साहब अम्बेडकर के सामने अलग-अलग माइक लगे हैं।

भदन्त चन्द्रमणि : नमोतस्स अरहतो भगवतो सम्मासम्बुद्धस्स।

डा. अम्बेडकर और सविता अम्बेडकर : (दुहराते हैं) नमोतस्स अरहतो भगवतो सम्मासम्बुद्धस्स।

भदन्त चन्द्रमणि दो बार उक्त प्रार्थना करते हैं और दोनों बार डा. अम्बेडकर और सविता अम्बेडकर उसे दुहराते हैं।

गाडबोले : अब भदन्त चन्द्रमणि जी त्रिशरण की दीक्षा देंगे।

भदन्त चन्द्रमणि : बुद्धं शरणं गच्छामि।

डा. अम्बेडकर युगल : बुद्धं शरणं गच्छामि।

भदन्त चन्द्रमणि : धम्मं शरणं गच्छामि।

डा. अम्बेडकर युगल : धम्मं शरणं गच्छामि।

भदन्त चन्द्रमणि : संघं शरणं गच्छामि।

डा. अम्बेडकर युगल : संघं शरणं गच्छामि।

उक्त बात को द्वितीय और तृतीय कहकर दूसरी बार और तीसरी बार भदन्तजी कहते हैं। उसे डा. अम्बेडकर युगल दोहराते हैं।

गाडबोले : अब भदन्त बन्धु भीमजी बाबा साहब युगल को पंचशील की दीक्षा देंगे।

भदन्त चन्द्रमणि : प्राणातियाता बेरमणी सिक्खा पदं समादियामि। (मैं प्राणी हिंसा न करने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

डा. अम्बेडकर युगल : प्राणातियाता बेरमणी सिक्खा पदं समादियामि।

भदन्त चन्द्रमणि : अदिन्नादाना बेरमणी सिक्खा पदं समादियामि। (मैं बिना पूर्व स्वीकृति के किसी की कोई चीज न लेने की शिक्षा ग्रहण

करता हूँ।

- डा. अम्बेडकर युगल : अदिन्नादाना बेरमणी सिक्खा पदं समादियामि ।
 भदन्त चन्द्रमणि : कामेसु मिच्छाचारा बेरमणी सिक्खा पदं समादियामि । (मैं व्यभिचार न करने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।)
- डा. अम्बेडकर युगल : कामेसु मिच्छाचारा बेरमणी सिक्खा पदं समादियामि ।
 भदन्त चन्द्रमणि : मुसावादाबेरमणी सिक्खा पदं समादियामी । (मैं झूठ, कठोर, व्यर्थ की बात एवं चुगली करने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।)
- डा. अम्बेडकर युगल : मुसावादाबेरमणी सिक्खा पदं समादियामी ।
 भदन्त चन्द्रमणि : सुरामेरयमज्ज पमादठ्ठाताबेरमणी सिक्खा पदं समादियामि । (मैं शराब, मदिरा तथा मादक द्रव्यों के सेवन तथा प्रमाद की कारगुजारियों आदि के खेल से दूर रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।)
- डा. अम्बेडकर युगल : सुरामेरयमज्ज पमदाठ्ठानाबेरमणी सिक्खा पदं समादियामि ।
 भदन्त चन्द्रमणि जी पंचशील की शिक्षा दो बार और दोहराते हैं, जिन्हें बाबा साहब अम्बेडकर और सविता अम्बेडकर दोहराते हैं । त्रिशरणं और पंचशील ग्रहण कर लेने के बाद बाबा साहब और उनकी पत्नी बुद्ध की प्रतिमा को तीन बार पुष्प चढ़ाते हैं और श्वेत कमल पुष्प चढ़ाते हैं । भदन्त चन्द्रमणि को हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं ।
- भदन्त चन्द्रमणि : साधु, साधु, साधु ।
 तालियों की गड़गड़ाहट के बीच लोग भगवान बुद्ध, बुद्ध धर्म और बाबा साहब डा. अम्बेडकर की जय के नारे लगाते हैं । बाबा साहब को मालाओं से लाद दिया जाता है ।
- भदन्त चन्द्रमणि : अब यहाँ उपस्थित आज तीन लाख लोगों को बोधिसत्व बाबा साहब त्रिशरण-पंचशील के साथ 22 प्रतिज्ञाओं की शिक्षा देंगे । कल भी धर्मान्तरण का यह कार्य जारी रहेगा और बाबा साहब कल भी इनकी दीक्षा देंगे । (भदन्त चन्द्रमणि बैठ जाते हैं।)
 डा. अम्बेडकर त्रिशरण, पंचशील और 22 प्रतिज्ञाओं की शिक्षा उपस्थित लोगों को देते हैं, जिन्हें उपस्थित लोग दोहराते हैं ।

(परदा गिरता है।)

परिशिष्ट

पंचगव्य

1. दूध, 2. दही, 3. तुलसी, 4. मक्खन/घी, 5. गोमूत्र।

22 प्रतिज्ञाएँ

1. मैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश को कभी ईश्वर नहीं मानूँगा और न ही उनकी पूजा करूँगा।
2. मैं राम और कृष्ण को ईश्वर नहीं मानूँगा और न कभी उनकी पूजा करूँगा।
3. मैं गौरी-गणपति इत्यादि हिन्दू धर्म के किसी भी देवी-देवताओं को नहीं मानूँगा और न ही उनकी पूजा करूँगा।
4. मैं इस बात पर विश्वास नहीं करूँगा कि ईश्वर ने कभी अवतार लिया है।
5. मैं कभी नहीं मानूँगा कि भगवान बुद्ध, विष्णु के अवतार हैं। मैं ऐसे प्रचार को पागलपन का झूठा प्रचार समझता हूँ।
6. मैं श्राद्ध कभी नहीं करूँगा और न कभी पिण्डदान दूँगा।
7. मैं बौद्ध धम्म के विरुद्ध किसी भी प्रकार का आवरण नहीं करूँगा।
8. मैं कोई भी क्रिया-कर्म ब्राह्मणों के हाथों नहीं कराऊँगा।
9. मैं इस सिद्धान्त को मानूँगा कि सभी मनुष्य समान हैं।
10. मैं समानत की स्थापना के लिए प्रयत्न करूँगा।
11. मैं भगवान बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग का पूर्ण रूप से पालन करूँगा।
12. मैं भगवान बुद्ध द्वारा बताई गई दस पारमिताओं का पूर्ण पालन करूँगा।
13. मैं प्राणी मात्र पर दया करूँगा और उनका पालन-पोषण करूँगा।
14. मैं कभी चोरी नहीं करूँगा।
15. मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा।
16. मैं कभी व्याभिचार नहीं करूँगा।
17. मैं शराब अथवा किसी भी प्रकार का नशा नहीं करूँगा।
18. मैं अपने जीवन को बौद्ध धम्म के तीन तत्त्वों—ज्ञान, शील और करुणा पर ढालने का प्रयत्न करूँगा।
19. मैं मानव समाज के उत्कर्ष के लिए हानिकारक और मनुष्य मात्र को ऊँच-नीच मानने वाले पुराने हिन्दू धर्म का पूर्णतः त्याग करता हूँ और बौद्ध धम्म को स्वीकार करता हूँ।
20. मेरा ऐसा पूर्ण विश्वास है कि बौद्ध धम्म ही सद्धम्म है।
21. मैं यह मानता हूँ कि मेरा पुनर्जन्म हो रहा है।
22. मैं यह पवित्र प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज से मैं बौद्ध धम्म की शिक्षा के अनुसार आचरण करूँगा।



Library

IAS, Shimla

H 291.42 M 41 D



96077